चन्दामामा

जून १९६२

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६-००

Remi
MPS.RG.4 HIN.

जून १९६२

मैं बहुत समय से आपकी चन्दामामा को पढ़ रहा हूँ और पढ़ते-पढ़ते मैं इस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि यह पत्रिका केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं। बल्कि यह ज्ञानोपार्जन का सबसे सुलभ साधन भी है। अधिक क्या लिखूँ, उसे हम धार्मिक पत्रिका के रूप में भी देख सकते हैं।

रमेश चन्द्र, कानपुर

अगर मुझसे कोई सवाल करे कि तुम्हारी प्रिय पत्रिका कौन-सी है तो मैं 'चन्दामामा' का नाम लेने में जरा नहीं हिचकिचाऊँगा। इसका प्रमाण केवल इसे पढ़ने के बाद ही मालूम हो जायेगा। मोहक कवर के साथ साथ कहानियाँ, कथाएँ आदि पढ़नेवाले के मनको आकर्षित कर लेती हैं। जैसे वेताल कथाएँ, भयंकर घाटी व बालकाण्ड इत्यादि। इतना सब कुछ होते हुए भी इसमें एक बात और खलती है कि इसमें एक वर्ग पहेली अवश्य होनी चाहिए।

ओमप्रकाश 'वीरना', पंजाब

"चन्दामामा" मार्च १९६२ के अंक में कहानी 'पूर्ण घट' में नायक का कार्य साहस पूर्ण दर्शाया गया है फिर भी कुछ बातें जो कहानी की मुख्य विशेषाएँ हैं। जैसे नायक का दो मन की गदा उठाना व राक्षस को मारना और तीन सिरोंवाला राक्षस आदि पाठक के मन पर एक ऐसी आश्चर्य जनक लीक छोड़ जाता है जिससे उसके मन पर वो बातें कई देर तक छायी रहती हैं। वैसे कहानी सुन्दर है।

ओमप्रकाश 'वीराना' पंजाब

हमारे यहाँ चन्दामामा पिछले चार-पाँच साल से लगातार आ रहा है : यदि कभी इसके मिलने में देरी हो जाती है, तो बेचैनी-सी मालूम पड़ती है। इसके चित्र देखकर मन मुग्ध हो जाता है, क्योंकि चित्रों में स्वाभाविकता व सजीवता होती है। हमारा सुझाव है कि यदि इस में विज्ञान की धारावाहिक प्रकाशित की जाएँ, तो और भी अच्छा रहे। इसकी कहानियाँ बड़ी शिक्षा देनेवाली होती है। सब इसे चाव से पढ़ते हैं।

परमप्रकाश दीक्षित, कानपुर

चन्दामामा यथार्थ में चन्दामामा है। वह सभी के लिए उतना ही प्रिय और आनन्ददायक है जितना कि आकाश का चन्दामामा।

राजेन्द्रकुमार जैन, हटा

हमारे यहाँ चन्दामामा की प्रतियाँ तीन साल से आ रही हैं, मैं तथा मेरे घर के माता-पिता भी उसे बड़े ही उत्सुकता से पढ़ते हैं। उसके घर में आते ही हम सब भाई चन्दामामा के लिए झगड़ना शुरू कर देते हैं। परन्तु जब चन्दामामा को पढ़ने के लिए बैठता हूँ, तब उसे छोड़ने का दिल नहीं लगता और वह एक घंटे में ही समाप्त हो जाती है। अतः मेरा सुझाव है कि आप उसे मास में दो प्रति भिजवाने की कोशिश करें।

ललितकुमार दत्त, रायपुर

मैं चन्दामामा लगातार ६ वर्षों से पढ़ता आ रहा हूँ और सदा वह मुझे प्रिय लगती रही है क्योंकि इसमें सुन्दर तथा शिक्षाप्रद कहानियाँ चित्रों सहित दी जाती हैं। परन्तु इसमें मैंने एक कमी का अनुभव किया है वह है "खेल-कूद सम्बन्धी स्तम्भ" का न होना। इसलिए मेरा और मेरे साथियों का यह विचार है कि चन्दामामा में एक ऐसा स्तम्भ भी खोला जाये, जिससे पाठकों को शिक्षाप्रद कहानियों के अतिरिक्त खेलों के विषय में भी ज्ञान प्राप्त हो सके।

क्या आप यह स्तम्भ खोल सकेंगे!

सुमनकुमार वशिष्ट, नई दिल्ली

AMRUTANJAN
LTD.'S
Gripe Mixture
AMRUTANJAN LIMITED

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

पिछले दो चार मास से हमारे कई पाठक पूछ रहे हैं कि दास और वास की चित्र कथा का प्रकाशन क्यों बन्द कर दिया गया है।

जब तक यह कथा प्रकाशित होती रही, इसकी काफी प्रशंसा हुई, जब यह प्रकाशित नहीं हो रही है, तब भी यह याद की जा रही है—यह जानकर हमें संतोष होता है। पर किसी भी पत्रिका में एक स्तम्भ सदा तो नहीं चल सकता? यह नहीं, तो कुछ और जो इसी तरह मनोरंजक होगा, हम प्रकाशित करने की सोच रहे हैं।

वर्ष: १२ जून १९६२ अंक: १०

भारत का इतिहास

अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया। इसके साथ भारत का इतिहास भी भिन्न भिन्न प्रवाहों में बहने लगा। भिन्न भिन्न प्रान्तों में भिन्न भिन्न राजा आ गये और वे इतिहास को भिन्न भिन्न मार्गों में ले गये।

अशोक के उत्तराधिकारियों के बारे में भी तरह तरह की किंवदन्तियाँ हैं। पुराणों के अनुसार अशोक के बाद कुणाल राजा हुआ। काश्मीर के ऐतिहासिक ग्रन्थों में लिखा है कि जलौक राजा हुआ। यह अशोक का लड़का था। यह भी सम्भव है कि अशोक के साम्राज्य को उसके लड़कों ने बाँट लिया हो। अशोक के शिलालेखों में तीवर का नाम ही दिखाई देता है। परन्तु यह तीवर किसी प्रान्त का राजा बना हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। पुराणों के अनुसार कुणाल के बाद बन्धु पालित ने राज्य किया। बौद्ध जैन ग्रन्थों के अनुसार कुणाल के एक और लड़का था, जिसका नाम सम्प्रति था, कुणाल के बाद बहुत से राजाओं के राज्य करने के बाद इसने पाटलीपुत्र और उज्जयनि का परिपालन किया। सम्प्रति से पहिले के राजाओं में दशरथ भी एक था। अशोक के बाद कुछ समय के लिए ही दशरथ ने मगध का शासन किया। बिहार के नागुर्जनी पहाड़ों में प्राप्त शिलालेखों के अनुसार उसने आजीविकों को गुफायें दान में दी थीं।

दशरथ और सम्प्रति के बाद शालीशक ने राज्य किया। गार्गी संहिता नामक ज्योतिष ग्रन्थ में इसका नाम है। यह दुष्ट था। इसके बाद देववर्मा, शतधनु,

बृहद्रथ, राजा हुए। यह पुराणों में लिखा हुआ है। बृहद्रथ के सेनापति प्रन्यमित्र ने उसको गद्दी से उतरवा दिया और शुन्ग वंश की स्थापना की।

कालिदास के "मालविकाग्नि मित्र" नाटक में लिखा है कि काश्मीर मौर्यों के शासन से दूसरों के हाथ चला गया। ई. पूर्व तीसरी शताब्दी के समाप्त होने से पहिले ही, काबुल की घाटियों का सुभागसेन राजा हुआ। उसने अपना राज्य सिन्धु के दोआब तक विस्तृत किया। यह मौर्य न था।

मौर्य साम्राज्य के निश्शक्त होने का कारण अशोक का अहिंसा मार्ग भी हो सकता है। साम्राज्य के निश्शक्त होते ही वायव्य दिशा की ओर से यवनों और असभ्य जातियों ने आक्रमण किया। गान्धार शाकल (उत्तर पंजाब का मध्य भाग) में बलशाली विदेशी राज्य थे। दक्षिण के प्रान्त स्वतन्त्र हो गये और वे ऐसी संस्कृति का निर्माण कर रहे थे जो मगध साम्राज्य को मात करती थी।

मगध और उसके आसपास के भाग को शुन्ग वंशीयों ने अपने आधीन कर लिया। कहा जाता है, ये भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे। शुन्ग वंश के प्रथम राजा पुष्यमित्र का राज्य दक्षिण में नर्मदा तट तक पश्चिमोत्तर दिशा में जलन्धर, सयालकोट तक था। पुष्यमित्र की राजधानी तो पाटलीपुत्र ही थी, परन्तु युवराज अग्निमित्र ने अपनी राजधानी विदिश (पूर्वी मालवा) में बनाई।

शुन्ग राजाओं पर यवनों का अधिक दबाव रहा। इस दबाव के बारे में पतंजलि, कालिदास अदि ने अपनी कृतियों में लिखा है। यवनों के आक्रमणों को जो दिन

प्रति दिन बढ़ते जाते थे रोकने में अग्निमित्र का पुत्र वसुमित्र सफल हुआ। इसने अपनी विजय के बाद दो बार अश्वमेधयज्ञ करवाये।

पुष्यमित्र ने ३६ वर्ष तक परिपालन किया। यानि लगभग ई. पू. १५० तक। उसके लड़के अग्निमित्र को कालिदास ने अपने नाटक "मालविकाग्नि मित्र" का नायक बनाया। धीरे धीरे शुन्ग राजाओं की प्रसिद्धि क्षीण होने लगी। वास्तविक शासन शक्ति उनके मन्त्री कण्वों के हाथ आ गई।

ई. पू. ४०-३० के बीच दक्षिण से एक महावीर आया और उसने शुन्ग और कण्वों को पराजित कर दिया।

पुराणों के अनुसार यह महावीर सातवाहन था, आन्ध्र का था। कहा जाता है कि सातवाहन का प्रान्त कहीं बल्लारि के पास था। सातवाहन की कीर्ति शालीवाहन की कथाओं में अमर है।

सातवाहनों में जिसको विश्व ख्याति मिली, वह शातकर्णी प्रथम था। पट्टाभिषेक के होते ही इसने अश्वमेध यज्ञ किया। इसके बाद शक प्रबल हो उठे। शातवाहन की शक्ति कम हो गई। शातवाहनों को पुनः शक्ति प्रदान की गौतमी पुत्र शातकर्णी ने। इसने शक, युवन और पह्लवों को हराया। इसका साम्राज्य उत्तर में मालवा देश से दक्षिण में कन्नड़ देश तक व्याप्त था। इसका लड़का वाशिष्ठी पुत्र पुलुमायी ने गोदावरी के तट पर प्रतिष्ठानपुर में अपनी राजधानी बनायी। सातवाहनों में अन्तिम राजा श्रीयज्ञ शातकर्णी था। इसके बाद सातवाहन साम्राज्य क्षीण होता चला गया।

पार्वती परिणय

पंचम अध्याय

रति की मूर्छा हटी
उठी शीघ्र ही घबरायी
नेत्र किये विस्फारित
लगी खोजने पति को

'हे पतिदेव, हो तुम कहाँ?'
उत्तर में पाया उसने
न जीवित पति को
पाया केवल भस्म-राशि को

शिव की कोपाग्नि में
भस्म पति की कथा सुन
गिरी मही पर धड़ाम से
विलपने लगी अति शोक से

"जब टूटता है बाँध
छोड़ कमल को नीर
बह जाता है सारा
रह जाता है कमल एकाकी

'मैं भी हूँ अब असहाया
है वह वसंत अब कहाँ
क्या वह भी गया जल
शिव की इस कोपाग्नि में"

रति की करुण चीख यह
दहला रही दिशाएँ सारी
पहुँचा वसंत, हो भयभीत
आँखें सजल, मुख अति दीन

"वसंत, देख तुम्हारा यह सखा
है शांत बुझे दीपक-सा
व्यर्थ है जीवन मेरा यह
धिक है पतिहीन इस जीवन को

'सुखकारी पुष्प-शय्या सजाते थे वे
उन्हें सजाएँ क्या अब चिता पर
मैं भी चलूँ साथ ही अपने पति के
करो विदा हम दोनों को इक साथ

'हे परमशिव! पधारे वे यहाँ
हित करने देवताओं का
हुए दग्ध वे तुम्हारी इस कोपाग्नि में
शक्ति हुई उनकी निष्फल यों प्रथम बार

'हे पुष्पशर! बहकाया देवों ने तुम्हें
बलि दी उन्होंने तुम्हारी अपने हित
क्या लुटेगा सुहाग मेरा सदा के लिए
लौट आओ, वसंत के लिए ही सही

'कोयलों की यह मधुर कूक
यह मलय-मारुत, शीतल फुहार
भ्रमरों का गुँजन, फूलों की यह सुगंध
अब रहेगी ज़रूरत ही इनकी किनको?

'अति सुन्दर मेरे इस पति के अंत से
हाय! फट क्यों नहीं जाता दिल मेरा
क्यों न समा पाती मैं इस धरती में
मेरा है दिल क्यों बना पत्थर-सा यों"

रोती-चिल्लाती रति पाने जा रही
अपना आश्रय अग्नि-पुँज में
इतने में पड़ी ध्वनि इक कान में
'ठहरो बहन, ठहरो! होओ शांत'

वाणी आरूढ़ हँस-वाहन पर
थी खड़ी आकाश में ही, बोली
'हे कल्याणी! पाओगी अपने पति को
अधीर हो खोओ न अपने प्राण

'हुए तुम्हारे पति सम्मोहित
अपने ही भव्य सृजन पर
ब्रह्म पर छोड़ा बिन विचारे
सम्मोह-अस्त्र इक अद्भुत

'ब्रह्म हुए अति क्रुद्ध
शाप दिया मदन को
"जल जाओगे तुम
शिव की कोपाग्नि में"

'धर्म जो साथ था ब्रह्म के
बोला कर जोड़ विनय से यों
"विधाता! मदन न हो तो
हो जीव कैसे प्राणवान!

'चाहिए हमें उस मदन की
चाहिए उपस्थिति उसकी सदा
बेचारे ने निभाया अपना धर्म
आप क्यों कुपित उस पर यों"

'सुन बोले ब्रह्म यों धर्म से
"मदन पाएगा प्राण फिर से
हैमावती का हो विवाह अगर
परमपावन परमेश्वर से"

'रति! तुम्हारा नाथ मिलेगा तुमसे
पा नवजीवन फिर से
करो प्रतीक्षा अपने पति की
धरो धीरज, पोंछो आँसू अपने'

ब्रह्म-पत्नी वाणी ने दिया
उसे न धीरज मात्र ही

दीं इन्द्रजाल की षडविद्यायें
रति है मुक्त विघ्नबाधा ओं से

रति की आँख भर आयीं
उमड़ आया हृदय स्नेहातिरेक से
दीर्घ आयु की करती हुई कामना
हुई अंतर्धान भारती पल-भर में

वसंत भी हुआ शांत, हो हँसमुख
बंधाने लगा ढाढ़स रति को
'हे माता! लगो प्रयत्न में अब
तुम्हारा पति पावे पुनर्जीवन

'शिव-पार्वती का हो विवाह
यही रहे इच्छा तुम्हारे मन की
जननी! पाने पति को फिर से
रहा नहीं कोई और उपाय

'शंकर हैं संरक्षक सकल लोक के
करो जी जान से आराधना उनकी
अब पुनर्जन्म होगा मदन का
उसी ईश्वर की कृपा-दृष्टि से

'मैं भी रहूँगा यहीं
हिमालय के इस प्रान्त में
मदन आवे न जब तक
पग न धरूँगा स्वर्ग में

'जननी! रहो कहीं शांत हो!
मुक्त हो दुख के भार से
आवे न पति जब तक तुम्हारे
रख मन को अपने काबू में'

वसंत के इन शीतल शब्दों ने
किया न रति को शांत, बोली

'हुआ जीवन का अंत
पर वाणी ने दी प्राण-भिक्षा

'वे न आतीं तो क्या होता
मैं होती अंक में मृत्यु-देवी के
अब रहूँ मैं कहाँ? कब तक?
ले भारस्वरूप इस जीवन को'

रति के शोक का
न रहा पारावार
ले पद-धूलि रति की
चला वसंत खिन्न हो'

डालियाँ भी झुकी हुईं, रो रहीं
मानों रति की देख वेदना
पक्षी भी कर रहे आर्तनाद
वे भी क्षुब्ध देख दीन रति को

[११]

[ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक के पकड़े जाने के बाद, जयमल्ल और केशव के लिए नगरवासी सारा पहाड़ छानने लगे। केशव के बूढ़े पिता ने बताया कि वे दोनों भिखारी के भेष में शहर भाग गये थे। यह सुन राजगुरु ने नगर में भिखारियों को पकड़ने के लिए सैनिकों को भेजा। उसके बाद :—

राजगुरु द्वारा भेजे हुए सैनिक और नगर के उत्साही युवक देखते देखते सब भिखारियों को घेरकर राजमहल की ओर ले जाने लगे। इन लोगों में केवल भिखारी ही न थे, बिचारे गरीब लोग भी थे। मैले कपड़े पहिननेवालों की, चीथड़े पहिननेवालों की भी गिनती जब भिखारियों में की जाने लगी, तो उनकी संख्या हजारों से भी अधिक हो गई।

राजमहल के आँगन में इन सबका झुन्ड देखकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कभी कल्पना न की थी कि उसके राज्य में खाने पीने के मोहताज इतने सारे होंगे।

राजा, राजगुरु और ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक के आँगन में आते ही सैनिकों ने भिखारियों को एक पंक्ति में खड़ा कर दिया। राजा और राजगुरु के लिए उन्नत आसन की

व्यवस्था की गई। त्राभदण्डी को बाँधकर उनके पास खड़ा किया गया।

"गुरु, मैं अभी तक इसी ख्याल में था कि हमारे राज्य में खुशहाली है। पर इन सबको यहाँ देखकर मुझे ऐसा लगता है कि हमारे शासन में कुछ न कुछ त्रुटियाँ हैं। महामन्त्री ने कभी यह संकेत भी न किया कि परिस्थितियाँ इतनी विषम थीं।" राजा ने निरुत्साहित स्वर में सिर नीचा करके कहा।

राजगुरु ने मुस्कराते हुए कहा—"महाराज, इसमें महामन्त्री की कोई गलती नहीं है। इन दरिद्रों को खजानों के धन से पालना सम्भव नहीं है। बिना प्राणहानि के धन प्राप्त करने का एक मार्ग दिखाई देता है।" कहकर राजगुरु ने राजा के कान में कहा—"इस त्राभदण्डी के द्वारा भयंकर घाटी की विपुल धनराशि को लेने का उपाय सोचिये।"

राजा का मुँह चमचमाने लगा। उसने त्राभदण्डी की ओर सिर फेरकर कहा—"त्राभदण्डी, यदि तुमने अपना दुष्ट व्यवहार छोड़ दिया, तो हम तुमको क्षमा कर देंगे। हम वचन देते हैं।"

यह सुनते ही मान्त्रिक ने राजा को साष्टाङ्ग करके कहा—"महाराज, मैं हमेशा आपका ही सेवक हूँ। प्रार्थना है कि दुष्टों की प्रेरणा पर मेरी राजभक्ति पर शंका न कीजिये। आपके खजानों को सोने चान्दी से भर देने के लिए ही मैंने काल भैरव की उपासना करके भयंकर घाटी के मार्ग...."

त्राभदण्डी अभी अपना वाक्य पूरा भी न कर पाया था कि राजगुरु ने कहा—"त्राभदण्डी, इस घाटी के बारे में तुम ये सब के सामने न कहो। मैं तुम्हारी

राजभक्ति से अपरिचित नहीं हूँ। बेफिक्र रहो। मगर खबरदार।"

ब्रह्मदण्डी बिल्कुल चुप हो गया, इतने में सेनापति ने वहाँ आकर पंक्ति में खड़े भिखारियों को आगे बढ़ने के लिए कहा। सैनिकों के कहते ही भिखारी आगे बढ़े। ब्रह्मदण्डी ने उनमें से हरेक का मुँह गौर से देखते हुए कहा—"यह नहीं है, यह, यह भी नहीं है, यद्यपि इसका चेहरा जयमल्ल से मिलता है। पर वह इससे कुछ ऊँचा है। यह भी केशव से मिलता जुलता है। पर यह पैना है। उसकी आँखें शेर की सी हैं।"

इस तरह भिखारियों की परीक्षा में एक घंटा लग गया। आखिर यह साफ़ हो गया कि उनमें जयमल्ल और केशव न थे।

"किसने यह अफ़वाह उड़ाई थी?" राजगुरु ने पूछा।

"उन लोगों ने जो पहले पहल जंगल में गये थे। वहाँ उसको किसी बूढ़े ने बताया था।" सेनापति ने कहा।

"वह....वह बूढ़ा, वह केशव का पिता है। मैं नहीं सोचता कि वह इतना धोखा

दे सकता है। केशव, नहीं तो जयमल्ल की ही बनायी हुई यह कहानी है। सम्भव है कि वे अब तक राज्य की सीमा पार करके भी चले गये हों।" ब्रह्मदण्डी ने कहा।

राजगुरु को भी लगा कि उसके इस कथन में कुछ सचाई थी। शायद वे दोनों अब तक भयंकर घाटी के रास्ते पर होंगे। सम्भव है कि वहाँ पहुँच रहे हों।

राजा, ब्रह्मदण्डी, मान्त्रिक और राजगुरु फिर महल में वापिस आये। सेनापति ने

के कन्धे पर फण उठाये साँप का चिन्ह है। उस चिन्ह के आधार पर ही मायादण्डी जान सका कि वह उसके काम के लिए उपयुक्त था।" राजगुरु ने राजा को समझाते हुए कहा।

"पर वह तो हमारी आंखों में धूल झोंककर चला गया, मालूम होता है।" राजा ने कहा।

"हमें धोखे का जवाब धोखे से देना होगा। मुझे एक अच्छा उपाय सूझ रहा है। यदि आप अन्यथा न समझें तो बताता हूँ।" राजगुरु ने कहा।

राजा ने यह स्वीकार करते हुए धीमे धीमे सिर हिलाया।

"हम यह घोषणा करवायें कि यदि यह केशव एक सप्ताह में नगर वापिस आ जाये, तो आधा राज्य उसे दिया जायेगा। यदि वह इस अवधि में न आया, तो जो कोई उसको जीवित पकड़कर लायेगा, नहीं तो उसका सिर काटकर लायेगा उसको सामन्त बनाया जायेगा। मैं समझता हूँ कि वह आधे राज्य के लालच में जरूर फिर हमारे राज्य में आ जायेगा। फिर उसका भयंकर घाटी में जाने के लिए कैसा

भिखारियों को राजमहल के द्वार से नगर में खदेड़ दिया। राजा और राजगुरु मिलकर विचार-विमर्ष करने लगे।

"महाराज, हमें इस अच्छे मौके को नहीं चूकना चाहिये। भयंकर घाटी के चा दी, सोने को हमें हथियाना ही होगा। ऐसा करने से आपका और प्रजा का भी कल्याण होगा। इस गुप्त धन को पाने की शक्ति केवल केशव में है, यह पहिले ही मान्त्रिक बता चुका है। उसे पकड़ने के लिए ही वह इतने समय तक पहाड़ में धरना दिये हुए था। कहते हैं कि केशव

उपयोग किया जाये, मैं और ज्वालादण्डी आपस में निर्णय करेंगे। यही एक रास्ता है।" राजगुरु ने कहा।

आधा राज्य देने की बात सिर्फ केशव को ललचाने के लिए ही थी, यह सोच राजा इसके लिए मान गया। तुरत ब्रह्मपुर राज्य में, ग्रामों में, नगरों में राजा की आज्ञा के अनुसार घोषणा कर दी गई।

अभी दो तीन दिन ही गुजरे थे कि इस घोषणा की खबर केशव और उसके बूढ़े पिता, जयमल्ल तक भी पहुँची। नगर वासियों के पहाड़ पर से जाने के बाद वे तीनों एक पहाड़ी गुफा में चले गये थे। वे सोचने लगे कि अब उन्हें क्या करना था।

"दाल में कुछ काला मालूम होता है।" बूढ़े ने कहा।

"इसमें सन्देह ही क्या है। जब तक केशव साथ न होगा, तब तक भयंकर घाटी का धन नहीं मिल सकता ज्वालादण्डी और राजगुरु ने कहा होगा कि इसके लिए उपयुक्त व्यक्ति केशव ही था।" जयमल्ल ने कहा।

"शायद मेरे हाथ पैर बांधकर वे मुझे भयंकर घाटी ले जाने की सोच रहे हैं। जब उनका काम पूरा हो जायेगा तब वे मुझे अवश्य फांसी दे देंगे।" केशव ने गुस्से में कहा।

"यह खबर तो अब भी है, जानते हो, तुम्हारे सिर की कीमत आधा राज्य है। इसलिए जितनी जल्दी हम इस राज्य की सीमा से बाहर चले जायें उतना अच्छा है।" जयमल्ल ने कहा।

"इस रूप में तो हमें कोई भी पहिचान सकता है। अब तक इस घोषणा के बारे

कि भ्रमण के लिए निकले हैं और इस तरह हम विन्ध्या देश पार कर जायेंगे। इसके लिए जितने धन की जरूरत है, वह नाभदण्डी ने गुफ़ा में कहाँ छुपा रखा है, मैं जानता हूँ।" जयमल ने कहा।

"उस गुफ़ा पर रात दिन दो सैनिक पहरा दे रहे हैं।" केशव ने कहा।

"उन दोनों को मारकर हम गुफ़ा में नहीं जा सकते क्या?" जयमल ने पूछा।

"जहाँ तक हो सके, उन्हें बिना मारे ही गुफ़ा के अन्दर जाया जा सकता है। यदि सब कुछ चुपचाप करना है, तो शाम होने तक प्रतीक्षा करना अच्छा है।" बूढ़े ने कहा।

यह करने के लिए केशव जयमल भी मान गये।

सूर्यास्त होने के बाद, जब तक खूब अन्धेरा न हो गया, तीनों ने बारी बारी से जिस गुफ़ा में वे थे, वहाँ पहरा दिया। उनको इसका बड़ा डर था कि किसी समय भी नगरवासी उन पर हमला कर सकते थे। जब रात हो गई तो तीनों मान्त्रिक की गुफ़ा की ओर निकले। वे बिल्लियों की

में और देश के लोग भी जान गये होंगे। क्या वे हमें जीने देंगे!" केशव ने प्रश्न किया।

केशव के बूढ़े पिता की चिन्ता की सीमा न थी। उसने गुफ़ा से बाहर आकर चारों तरफ़ देखा "धन के लालच में कम से कम कुछ लोग फिर यहाँ आयेंगे। पहाड़ी गुफ़ायें और घाटियाँ छान डालेंगे तुम यहाँ से तुरत चले जाओ।"

"इन वेषों से काम नहीं बनेगा। क्षत्रिय युवक का वेश पहिनकर यह कहेंगे

तरह चुपचाप पत्थरों के पीछे पीछे गुफ़ा के पास पहुँचे। सैनिकों ने उन्हें नहीं पहिचाना। बूढ़ा सैनिक के पास के पत्थर के पीछे गया, पत्थर के पीछे से सैनिक की पीठ पर तलवार टिकाकर उसने पूछा—"चिल्लाओ मत, दूसरा कहाँ है?"

पीठ में तलवार की चोट लगते ही, सैनिक के होश गायब हो गये, वह अभी सोच ही रहा था कि क्या किया जाये, केशव और जयमल उसके सामने आ खड़े हुए। "हमारे डाकुओं के सरदार ने तुम दोनों को मारकर गुफ़ा में रखी एक चीज़ को लाने के लिए कहा है, मगर हम तुम्हें मारना नहीं चाहते। हम अपना काम करके चले जायेंगे, तुम्हारे साथ का सिपाही कहाँ है?"

सैनिक हक्का बक्का रह गया। गुफ़ा के पास खुर्राटे मारकर सोते हुए अपने साथी को उसने दिखाया। तुरत केशव और जयमल उस पर कूदे और उसके हाथ पैर बाँधकर उसे एक तरफ़ फेंक दिया।

"तलवार मेरी पीठ में घुस रही है। तुम अपने डाकू साथी को तलवार हटाने के लिए कहो। पहिला सैनिक यों गिड़गिड़ाने लगा, केशव और जयमल ने पहिले ही निश्चय कर लिया था कि बूढ़े का पहिचाना जाना खतरनाक था। वे तो विन्ध्याचल की ओर जा रहे थे। पर बूढ़े को यहीं कुछ समय और रहना था।

"यदि तुमने इस डाकू का मुँह देखा, तो तुम्हारे प्राण पखेरु उड़ जायेंगे। वह बड़ा भयंकर है।" कहकर केशव और जयमल ने मिलकर उस सैनिक को बाँध दिया और उसकी आँखों पर भी पट्टी बाँध दी।

जयमल्ल गुफ़ा में गया, थोड़ी देर बाद धुँआ लगे कपड़ों से बाहर आया। उसके हाथ में एक थैली थी। जब उसने वह थैली इधर उधर घुमायी, तो वह घन घन ध्वनि करने लगी।

"इस थैले में सोने के सिक्के हैं। त्रासदण्डी मान्त्रिक ने कितनों को ही ठगकर इस धन को जमा किया था। इसलिए इसको चुराना कोई बुरा नहीं है। इससे हम क्षत्रयोचित वस्त्र और शस्त्र खरीद सकते हैं। चलो अब चलें," जयमल्ल ने केशव से कहा।

तीनों वापिस अपनी गुफ़ा में आये। सवेरा होते ही उन्होंने उस धन में से कुछ खर्चकर आवश्यक चीज़ें खरीदने के लिए बूढ़े से नगर तक जाने के लिए कहा। बूढ़े ने बताया कि नगर में वह इस तरह का रूप बदलेगा कि उसे कोई नहीं पहिचान सकेगा। केशव और जयमल्ल इसके लिए मान गये।

गुफ़ा में पत्थरों के पीछे छुपे छुपा जयमल्ल सोना निकाल रहा था और उधर राजमहल में सोते त्रासदण्डी को बुरे सपने आ रहे थे। उसे सपना आया कि कोई चोर उसके सोने के सिक्कों का थैला लेकर घन घन कर रहा था।

"चोर चोर, सोना, सोना, चिल्लाता त्रासदण्डी पलंग पर से कूदा और दरवाज़े की ओर भागने लगा। वहां पहरा देते हुए सिपाही ने भाले से मान्त्रिक की छाती को निशाना बनाकर कहा—"एक कदम आगे रखा कि नहीं कि मार दूंगा।" फिर उसने साथ के सिपाहियों को बुलाया—"आओ, आओ, त्रासदण्डी भागने की सोच रहा है।"

(अभी है)

विधि लिखित

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। शव को उतार कर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, अब जो तुम कष्ट उठा रहे हो, लगता है, वह सब तुम्हारे भाग्य में लिखा है। भाग्य में लिखा, भले ही कितना विचित्र हो, होकर रहता है। यह दिखाने के लिए तुम्हें कशीव नाम के म्लेच्छ राजकुमार की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की। किसी जमाने में समुद्र के तट पर एक म्लेच्छ राज्य था। उसका राजा कशीव हुआ। वह नवयुवक था। उसे समुद्र यात्रा का बड़ा शौक था। समुद्र के अनेक द्वीप उसके राज्य में थे।

उसने एक बार सब द्वीपों को देखना चाहा। यात्रा के लिए उसने दस नौकायें

तैयार करवाईं। महीने भर के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थों से उसने नौकायें भरवार्दीं। बीस दिन समुद्र यात्रा निर्विघ्न रुप से चलती रही। इसके बाद समुद्र में भयंकर तूफ़ान आया। रात को जो तूफ़ान शुरु हुआ वह सवेरे जाकर शान्त हुआ।
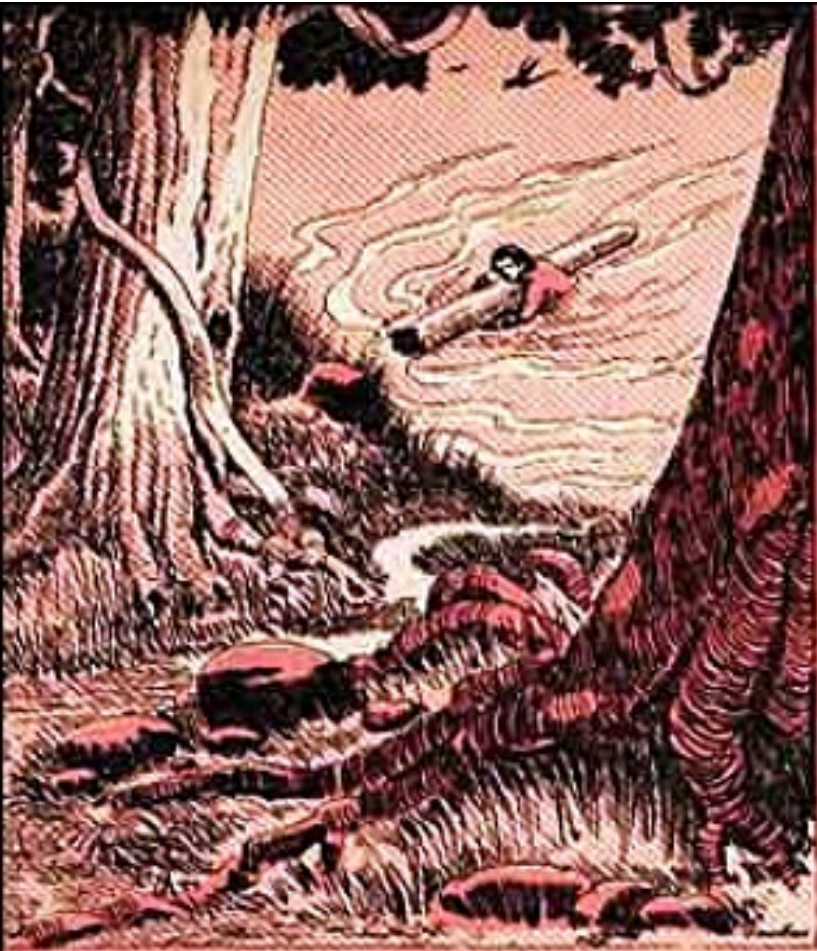
जब तूफ़ान रुका, तो उन्होंने अपने को एक अपरिचित द्वीप में पाया। वे वहाँ उतरे, वहाँ भोजनादि करके, वे फिर यात्रा पर निकल पड़े। पर वे न जान पाये कि वे किधर जा रहे थे। बीस दिन बिना दिशा ज्ञान के यात्रा करने के बाद उन पर बड़ी आपत्ति आयी। वे ऐसे द्वीप मे पहुँचे जहाँ चुम्बक के पहाड़ थे।

जो नौकायें चुम्बक के पर्वतों के पास आती थीं, वे टूट जाती थीं। नौका की हर लोहे की चीज़ चुम्बक का पर्वत खींच लेता। सारे पर्वत पर ऐसी ही चीज़ें चिपकी पड़ी थीं। कशीब की नौका का भी यही हाल हुआ। उसकी सब नौकायें समुद्र में डूब गईं, जो उनमें थे, वे भी डूब गये। केवल कशीब ही सौभाग्यवश नौका का एक शहतीर पकड़कर, द्वीप की ओर तैरकर गया और वहाँ थकान और आलस के कारण रेत पर सो गया।

तब उसे एक आश्चर्यजनक स्वप्न आया। सपने में उसने देखा, जहाँ वह खड़ा था, वहाँ रेत में खोदने पर, उसे एक धनुष बाण मिला। उसे लेकर उसने सिर उठाकर जो देखा, तो पर्वत के शिखर पर उसे एक योद्धा की मूर्ति दिखाई दी। जब उसने धनुष पर बाण चढ़ाकर योद्धा के पैरों पर छोड़ा, तो वह मूर्ति समुद्र में गिर गई। फिर कोई विचित्र व्यक्ति एक तमेड़ में आया। उसने उस व्यक्ति से बात न की। तमेड़ में जा बैठा। उसे वह कहीं ले गया।

कशीव, यह सपना खतम होते ही, उठ बैठा, वह जहाँ था, वहाँ की रेत खोदने लगा। सचमुच उसे वहाँ धनुष और बाण दिखाई दिया। सिर उठाकर जो देखा, तो पहाड़ की चोटी पर योद्धा की मूर्ति भी थी। उसने बाण से उस मूर्ति को समुद्र में फेंक दिया। इसके कुछ देर बाद कोई व्यक्ति एक तमेड़ लाया। कशीव बिना बोले उस तमेड़ पर बैठ गया। वह व्यक्ति तमेड़ समुद्र में ले जाने लगा।

यह यात्रा बहुत देर तक चलती रही। और कशीव तमेड़ चलानेवाले की ओर आश्चर्य से देखता रहा क्योंकि उसे ऐसा लग रहा था, जैसे उसे कहीं पहिले देखा हो। बहुत सोचा, पर उसे याद न आया कि कहाँ देखा था। इतने में तमेड़ एक और तट के पास आने लगी। तब कशीव को याद आया कि उसने उसको कहाँ देखा था, उसकी शक्ल सूरत उस मूर्ति से मिलती थी, जिसको उसने पहाड़ की चोटी पर देखा था।

"आप कौन हैं? आपका, पहाड़ की उस मूर्ति से क्या सम्बन्ध है?" कशीव ने उससे पूछा। तुरत उस व्यक्ति ने चप्पू चलाना बन्द कर दिया। कशीव को दोनों हाथों से उठाकर समुद्र में फेंक दिया। कशीव जब पानी पर तैरा, तो कहीं तमेड़ न थी।

तट पास ही था, पर वहाँ तक तैरकर पहुँचने में उसे काफी समय लगा। तब तक अन्धेरा हो चुका था। उसने अपने गीले कपड़े उतार दिये और वहीं सो गया। वह सवेरे उठा। कपड़े तब तक सूख गये थे। उन्हें उसने पहिन लिए। उसने इधर उधर घूमकर वह सारी जगह देखी। उसे पता लगा कि वह बहुत

छोटा द्वीप था और वहाँ सिवाय उसके कोई प्राणी न था।

"क्या मैं समुद्र से इसलिए ही बाहर निकला था कि इस निर्जन द्वीप में यों मरूँ!" वह अभी यह सोच ही रहा था कि उसको समुद्र में एक नौका दिखाई दी। उस नौका को द्वीप की ओर आता देख, एक बड़े पेड़ पर चढ़ गया और पत्तों के पीछे छुप गया, यह देखने के लिए कि क्या होता है?

उसके देखते देखते नौका किनारे पर आकर लगी। फावड़े लेकर कुछ काम करनेवाले आये। द्वीप में उन्होंने कुछ चिन्ह ढूँढ़े और उन चिन्हों के अनुसार वे वहाँ खोदने लगे।

थोड़ी देर बाद उन्होंने एक पत्थर बाहर निकाला। फिर वे नौका तक गये। सिर पर थालियाँ, पोटलियाँ रखकर, रोटी, फल, कपड़े वगैरह लाये और उस गढ़े में उन्होंने डाल दिये। ये नौकर नौका के पास बहुत बार आये गये। बहुत-सा सामान लाकर उन्होंने वहाँ डाल दिया।

आखिर एक बूढ़ा एक छोटे लड़के को साथ लेकर वहाँ आया। वह लड़का देखने

में बड़ा सुन्दर था। उसका मुँह चन्द्रमा की तरह था। बूढ़ा उस लड़के के साथ उस गढ़े में उतर गया। फिर वह बूढ़ा अकेला बाहर आया। उसने अपने नौकरों को कोई आज्ञा दी। नौकरों ने पत्थर को यथास्थान रख दिया। गढ़े को मिट्टी से भरकर ये नौका में चले गये। नौका समुद्र में दूर निकल गई।

अपनी आँखों यह अन्याय देखकर कशीब को बड़ा गुस्सा आया। बिचारे उस लड़के को धोखा देकर, इस निर्जन द्वीप में लाकर और उसको यहाँ गाड़कर ये चले गये। जी भर के उसने उस बूढ़े को गालियाँ दीं। क्योंकि उस लड़के के जीवन में अभी मरना नहीं लिखा है, इसलिए ही मैं यहाँ आया हूँ—उसने सोचा।

नौका के जाते ही वह पेड़ पर से उतर आया और उस पत्थर को हटाने की कोशिश करने लगा। क्योंकि वह पत्थर बहुत भारी था, इसलिए उसको उठाना बहुत मुश्किल हो गया। परन्तु उस लड़के पर, जो अन्दर गाड़ दिया गया था, दया करके उसने जोर लगाकर पत्थर उठाया।

उसके नीचे जैसा कि उसने सोचा था एक कमरा था जो बहुत समय पहिले समस्त सुविधा और व्यवस्था के साथ बनाया गया था। और अब वहाँ वे सब वस्तुएँ, जो कूली लाये थे, तरीके से रखी हुई थीं। कहीं अन्धेरा न हो, इसलिए रोशनी जल रही थी।

उस विशाल कमरे के बीच में लड़का निश्चिन्त बैठा था। कशीब को आता देख वह घबरा कर उठा। यह देख कशीब ने कहा—"घबराओ मत बेटा, मैं तुम्हें इस समाधि से निकालने के लिए ही आया हूँ। उस दुष्ट बूढ़े ने तुमको बहकाकर मार देने के लिए ही यह सब किया है। परन्तु ऊपरवाले की मेहरबानी से मैंने यह सब देख लिया।"

यह सुन उस लड़के ने ज़ोर से हँसकर कहा:—

"आप गलत सन्देह कर रहे हैं। वह बूढ़ा दुष्ट नहीं है। मैं उसका इकलौता लड़का हूँ, बहुत दिनों बाद पैदा हुआ। वे मुझपर जान देते हैं। वे यहाँ मुझे मारने के लिए नहीं लाये हैं। मृत्यु से बचने के लिए ही यह सब व्यवस्था की गई है। मुझे एक राजा के हाथ से खतरा है। चुम्बकवाले पर्वत की मूर्ति के गिरने के चालीस दिन बाद जिसने उस मूर्ति को गिराया था, वह ही मुझे मार देगा—यह भविष्यवाणी ज्योतिषियों ने की है। इसलिए जब मैं गोदी का ही था कि मेरे पिता ने यहाँ यह कमरा बनवाया। यह पता लगते ही कि चुम्बक के पहाड़ की चोटी की मूर्ति गिर गई है, मुझे यहाँ लाया गया है। चालीस रोज़ के लिए ज़रूरी राशन यहाँ है। उसके बाद हमारे लोग यहाँ से मुझे ले जायेंगे। यही मुझे एक चिन्ता सता रही है कि ये चालीस दिन मैं अकेले

कैसे काटूँगा। आप अब सौभाग्यवश यहाँ आ गये हैं, इसलिए अब यह चिन्ता भी नहीं है। यहाँ आपके लिए भी काफ़ी खाने पीने की चीज़ें हैं।"

उस लड़के की बातें सुनकर कशीव दंग रह गया। वह न अनुमान कर सका कि उसके कारण उस लड़के पर क्यों आपत्ति आनेवाली थी। क्योंकि जब से उसने उसे देखा था, उसके प्रति उसके मन में इतना वात्सल्य उमड़ आया था कि वह उसके लिए प्राण तक देने को तैयार था। उसने उससे यह कहकर कि वह कौन था, उसे डराना न चाहा, बल्कि जब तक उसके लोग वापिस नहीं आ पाते, उसके साथ रहकर गप्पें मारते आराम से समय काटने का निश्चय किया।

दोनों में दृढ़ स्नेह सम्बन्ध बन गये। उस कमरे में तरह तरह की खाने की चीज़ें, मिठाई, फल वग़ैरह थे। गप्पें मारते मारते जब भूख लगती वे कुछ खा लेते, जब नींद आती तो वे सो जाते....उन्होंने चालीस दिन आराम से काट दिये।

आखिरी दिन रात को लड़के ने कहा कि वह फल खाना चाहता था। पलंग के ऊपर एक तलवार लटक रही थी। कशीव पलंग पर खड़े होकर तलवार निकाल रहा था कि मज़ाक में लड़के ने उसके पैर में गुदगुदी की। कशीव वह गुदगुदी न सह सका और गिर गया। उसके गिरते ही तलवार भी ठीक लड़के की छाती पर लगी और तुरत वह लड़का मर गया।

सवेरा होते ही उस लड़के का पिता नौकरों के साथ वहाँ आया। कशीव ने चाहा कि वहाँ से भाग जाये। परन्तु वह उस प्यारे लड़के को छोड़कर भी न जा सका। रात भर वह उस लड़के के शव पर

पड़ा पड़ा रोता रहा। आखिर वह उस कमरे से बाहर आया। पत्थर यथास्थान पर रखकर, मिट्टी डालकर, फिर पेड़ के पीछे जाकर छुप गया। जब वे लड़के के शव को उसके लोग ले गये तो वह जैसे तैसे द्वीप से चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, कशीव, वहाँ से क्यों नहीं चला गया, जब उसे मालूम हुआ कि उसके कारण उस लड़के पर आपत्ति आनेवाली थी? क्या इसलिए कि उसको ज्योतिषियों की भविष्यवाणी पर विश्वास न था, या इसलिए कि वह लड़के पर प्रेम करने लगा था? या इसलिए कि यदि वह चला गया, तो उसके कारण उसकी मौत न आयेगी।" इन प्रश्नों का उत्तर तुमने जान बूझकर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"मनुष्य के विश्वास कुछ भी हों, पर वे उसके आत्म विश्वास के समान नहीं हैं। कशीव को उस लड़के को देखकर पहिले तरस आया। जब उसको उससे परिचय हो गया, तो उसको उस पर वात्सल्य हो गया। क्योंकि वह जानता था कि उसने जान बूझकर उस लड़के से कभी कड़वी बात भी न की थी। इसलिए वह उस लड़के को अकेला छोड़कर न गया। उसने वहाँ रहकर लड़के को बहुत-सा आनन्द दिया। उसके न जाने में कोई गल्ती नहीं है। कोई तब न चिन्ता करे, जब वह विधि वश दुष्ट हो जाये, पर यदि विधि उससे कोई दुष्ट काम करवाये, तो उस पर पछताने की कोई जरूरत नहीं है।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य होकर फिर पेड़ पर जा बैठा।

बचपन का ऋण

हान राजाओं में वू नाम के राजा की एक आया थी। जब वू राजा था तो इस आया ने कोई दोष किया। राजा ने उसकी सुनवाई की और उसको सज़ा दी।

राजा के पास एक विदूषक था। बूढ़ी ने उसकी सलाह माँगी। विदूषक ने उससे कहा—"सज़ा से बचना बड़ा मुश्किल है। फिर भी जो मैं कहूँ सो करो। सुनवाई के समय कुछ न बोलना। जब सुनवाई के बाद तुम्हें सैनिक पकड़कर ले जायें तो तुम पीछे मुड़ मुड़ कर राजा की ओर देखना, फिर देखेंगे कि क्या होता है।" बूढ़ी ने वैसा ही किया। राजा ने सुनवाई करके उसको सज़ा दी। जब उसको सैनिक ले जाने लगे तो मुड़ मुड़ कर उसने पीछे देखा। उसको देख विदूषक ने पूछा—"क्या तुम पगली हो? कभी तुमने राजा को दूध पिलाया था, क्या अब उन्हें यह याद रहेगा?"

यह सुनते ही राजा ने उसकी सज़ा रद्द कर दी।

चतुर बीरबल

बादशाह अकबर के दरबार में फैजी, अबुल, फज़ल, राजा मानसिंह, टोडरमल, गंग कवि, तानसेन, बीरबल आदि विख्यात पुरुष कितने ही थे। उनमें बीरबल वाक्‌चातुर्य और युक्ति के लिए प्रसिद्ध था। उसके बारे में कितनी ही कहानियाँ कही जाती हैं। इनमें से सम्भव है कि कुछ गढ़ी हुई हों। परन्तु कहने सुनने में वे बहुत सुन्दर होती हैं।

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा—"सत्य और असत्य में कितना फासला है?" बीरबल ने बिना झिझके कहा—"चार अंगुल!" अकबर ने चकित होकर पूछा—"यह तुम कैसे कह सकते हो?"

"मेरी आँखें हमेशा सच ही देखती हैं। यदि हमारी बुद्धि में असत्य को घुसना है तो वह कानों द्वारा ही घुस सकता है। कान और आँखों के बीच चार अंगल का ही तो फ़ासला है।" बीरबल ने कहा।

एक बार अकबर ने भरे दरबार में पूछा—"मैं बड़ा हूँ या इन्द्र?"

इस प्रश्न का उत्तर दरबारी न दे सके। यदि कहते हैं कि इन्द्र बड़ा है तो बादशाह को गुस्सा आ सकता है। यदि कहते हैं कि बादशाह बड़ा है, अकबर सन्तुष्ट न होगा। कहेगा कि सिद्ध करो। उन्होंने बीरबल की ओर देखा।

उसने खड़े होकर कहा—"स्वर्ग का परिपालन करनेवाले इन्द्र से आप ही बड़े हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है।"

"यह तुम कैसे सिद्ध करोगे?" अकबर ने पूछा।

भगवान ने इन्द्र और आपको बनाकर तराजू में तोला। आप जिस तरफ़ थे

सोमदेव

वह पलड़ा भारी होकर झुका। इन्द्र का पलड़ा ऊपर उठ गया। इसलिए आप दुनियाँ के बादशाह बनाये गये और इन्द्र स्वर्ग के।" बीरबल ने कहा।

यह सुन अकबर के साथ सब दरबारी भी चकित हुए। खुश भी।

एक दिन अकबर यूँ ही तानसेन के साथ हास परिहास कर रहा था। उसने कहा—"हमारी दिल्ली में कितने कौव्वे हैं, तुम क्या कहते हो?"

तुरत बीरबल ने कहा—"कौव्वों की गिनती मैंने पहिले ही करवा रखी है। दिल्ली में ठीक साठ हज़ार, पाँच सौ, बावन कौव्वे हैं।"

यह सुन अकबर ने रूठकर कहा—"तो क्या गिनती करवाऊँ?"

"चाहें तो आप करवाकर देख लें। पर कोई खास फ़ायदा नहीं होगा। क्योंकि सम्भव है कि बहुत से कौव्वे अपने बन्धुओं को देखने बाहर चले गये हों। यह भी सम्भव है कि बाहर से कई अपने बन्धुओं को देखने यहाँ आये हुए हों।" बीरबल ने कहा।

यह सुन अकबर की नाखुशी जाती रही और वह ज़ोर से हँसा।

एक बार बीरबल से मज़ाक कराने के लिए अकबर ने जो मन में आया कह दिया। यूँ ही उसने बीरबल से कहा—"मैं आज से महीना दुगना बड़ा कर देना चाहता हूँ। तुम क्या कहते हो?"

"तो वही कीजिये। बहुत अच्छा रहेगा।" बीरबल ने कहा।

"क्यों?" अकबर ने पूछा।

"पूर्णिमा के दिन ही तो दुगने होंगे?" बीरबल ने कहा।

अकबर ने यह बात वहीं छोड़ दी।

एक बार अकबर अकेला बैठा, एक कमरे में कुछ सोच रहा था, तो बीरबल वहाँ उससे कुछ बातें करने गया।

"इस समय तुम यहाँ क्यों आये बीरबल?" अकबर ने खिझकर पूछा।

"आप से एक खास बात करना चाहता हूँ।" बीरबल ने कहा।

"आज मैं बात नहीं कर सकता। कल देखेंगे।" अकबर ने कहा।

"आप बात मत कीजिये, मैं ही करूँगा। आप सुनिये।" बीरबल ने कहा। यह सुन अकबर की सारी खीझ जाती रही। उसने जो कुछ बीरबल को कहना था, सुना और उसे भेज दिया।

एक दिन दरबार में अकबर ने अपने दरबारियों से कहा—"आप में से कोई यहाँ उपस्थित लोगों के मन में क्या मुख्य बात है, अनुमान कर सकते हैं?"

किसी ने कुछ नहीं कहा। अकेले बीरबल ने खड़े होकर कहा—"इस समय यहाँ उपस्थित लोग क्या सोच रहे हैं, मैं बता सकता हूँ।

"क्या सोच रहे हैं?" अकबर ने आश्चर्य में पूछा।
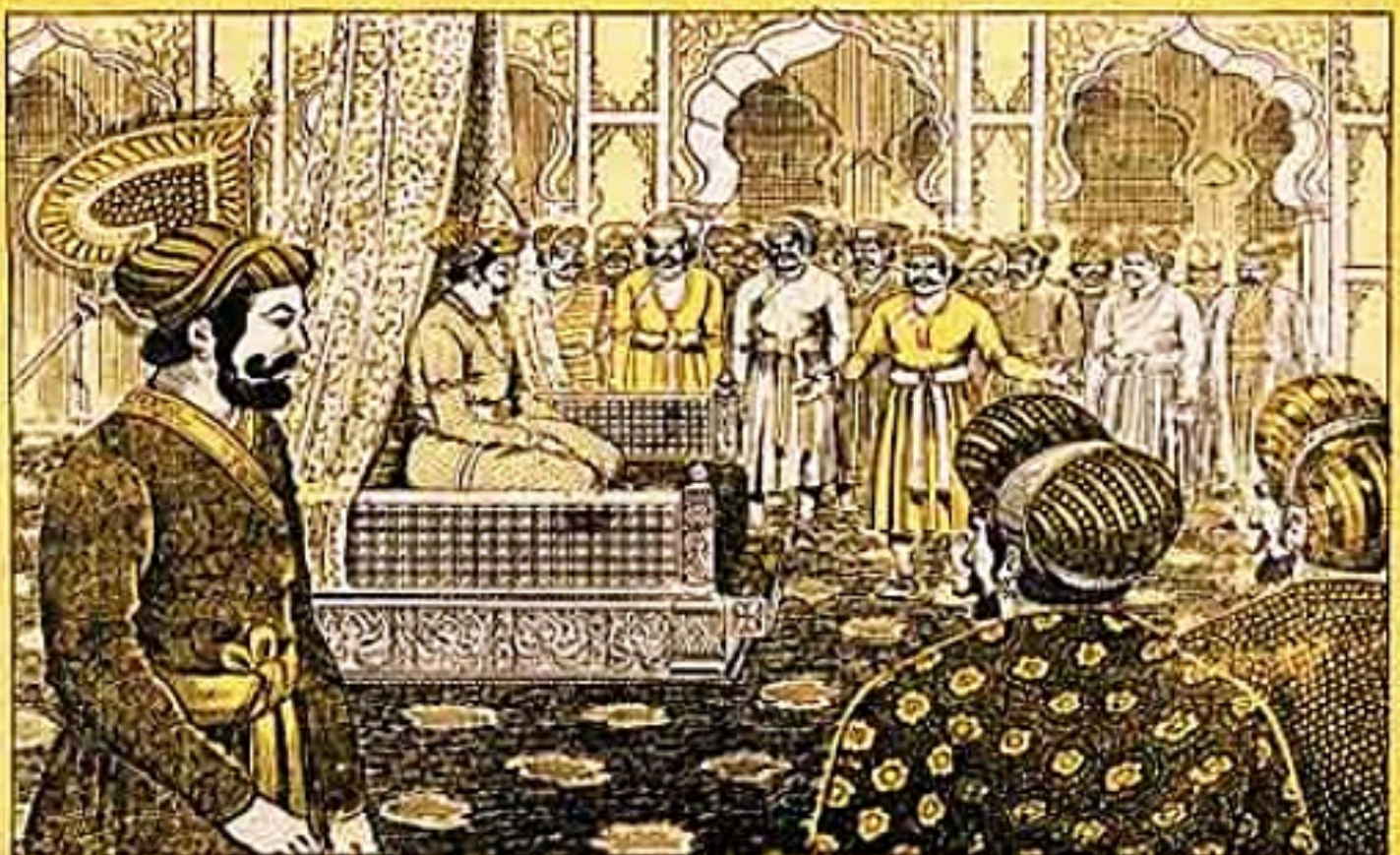
"बादशाह की अच्छी भली हुकूमत हमेशा यों चलती रहे। यदि यह कोई इस तरह नहीं सोच रहा है, तो उनसे कहिये कि वे यों कह दें। मैं मान लूँगा कि मैंने गलती की है।" बीरबल ने कहा। उसकी बात सुनकर सबने हर्ष व्यक्त किया।

बीरबल को तम्बाखू की आदत थी। यह अकबर को पसन्द न था। एक दिन वे राजमहल की छत पर से प्रकृति का दृश्य देखकर खुश हो रहे थे। दूरी पर तम्बाखू का बाग और उसके परे घास चरता गधा दिखाई दिया।

"देखा बीरबल! आखिर गधा भी तम्बाखू नहीं छूता।" अकबर ने कहा।

"हाँ हुज़ूर, गधे जैसे बुद्धू जानवर को तम्बाखू की कीमत नहीं मालूम।" बीरबल ने कहा।

एक दिन बीरबल जब अकबर से मिलने आया तो वे और उनकी पत्नी आम खा रहे थे। अकबर खाये हुए आमों की गुठलियाँ और छिलके पत्नी के पास रख रहा था।

बीरबल को देखते ही अकबर ने अपनी पत्नी को छेड़ने के लिए कहा—"देखा,

बेगम कितनी खाऊ है।" उसने उसके पास पड़ी गुठलियाँ और छिलके दिखाये।

बीरबल ने हंसकर कहा—"हाँ, स्त्रियों के लिए पतियों के पगचिन्हों पर चलना स्वाभाविक है इसलिए उनमें उनकी कुछ गन्दी आदतों का आ जाना भी स्वाभाविक है।"

"तो, तुम्हारा कहना है, कि मैं भी खाऊ हूँ।" अकबर ने यह दिखाते हुए कि उसके पास एक भी गुठली और छिलका न था, कहा।

"बेगम ने आम का रस चूसकर गुठली और छिलके फेंक दिये हैं। पर हुजूर ने उन्हें भी खा लिया है। खाऊपन और किसे कहते हैं!" बीरबल ने कहा।

उसकी चोट उसको ही लगी थी, यह देख अकबर तो कुछ न बोला, पर उसकी बेगम ने खुशी से तालियाँ बजाईं।

दिल्ली में लाड़ और कपूर दो गवैय्ये थे। बादशाहने एक बार उनका गाना सुना। उनका गाना सुन उसने खुश हो, उनको एक एक हाथी ईनाम में दिया।

उन गवैय्यों के लिए तो अपना पेट भरना ही मुश्किल हो रहा था, हाथियों का पेट कैसे भरते? बादशाह ने ईनाम दिया था। इनकार भी नहीं किया जा सकता था। बेचा नहीं जा सकता था। किसी और को दिया भी नहीं जा सकता था। हुजूर का अपमान होता। इसलिए उन्होंने अपनी सारी आमदनी लगाकर उन हाथियों को कुछ दिन पाला। फिर उनकी हालत इतनी बिगड़ गई कि भीख माँगने की नौबत आ पड़ी।

लाड़ कुछ चालाक था। उसे एक तरीका सूझा। उसने उसे कपूर को बताया। दोनों ने मिलकर उस हाथी की पीठ पर एक ढोल और एक तार का साज़ बान्ध कर

शहर में छोड़ दिया। वह अन्धाधुन्ध गलियों में भागता लोगों को सताने डराने लगा।

अकबर के पास फरियाद पहुँची कि किसी ने शहर में हाथी छोड़ दिया था। जब उसके बारे में पूछताछ की गई, तो मालूम हुआ कि वह हाथी वही था, जिसे उन्होंने उन गवैय्यों को ईनाम में दिया था। उन्होंने लाड़ और कपूर को अपने सामने बुलाया। "मैंने जो हाथी तुम्हें ईनाम में दिया था, उसको तुमने शहर में क्यों छोड़ा?"

"हुजूर हमने इस हाथी को पूरे एक साल पाला, जितना कुछ हम जानते थे, हमने इसे भी सिखाया। क्योंकि वह अब अच्छी तरह संगीत जान गया है इसलिए हमने सोचा कि वह अपना पेट स्वयं भर लेगा। जैसे हमने पेट पालते, उसका पेट भरा था, वह भी अपना पेट भरता हमें भी कुछ देगा, इस आशा में हमने उसे छोड़ दिया।" गवैय्यों ने कहा।

अकबर ने अपनी गलती जान ली। उनके कष्ट को भी वह ताड़ गया। उसने उनको एक गाँव ईनाम में दे दिया। उसके बाद वे बादशाह की मेहरबानी से आराम से जिन्दगी गुजर करने लगे।
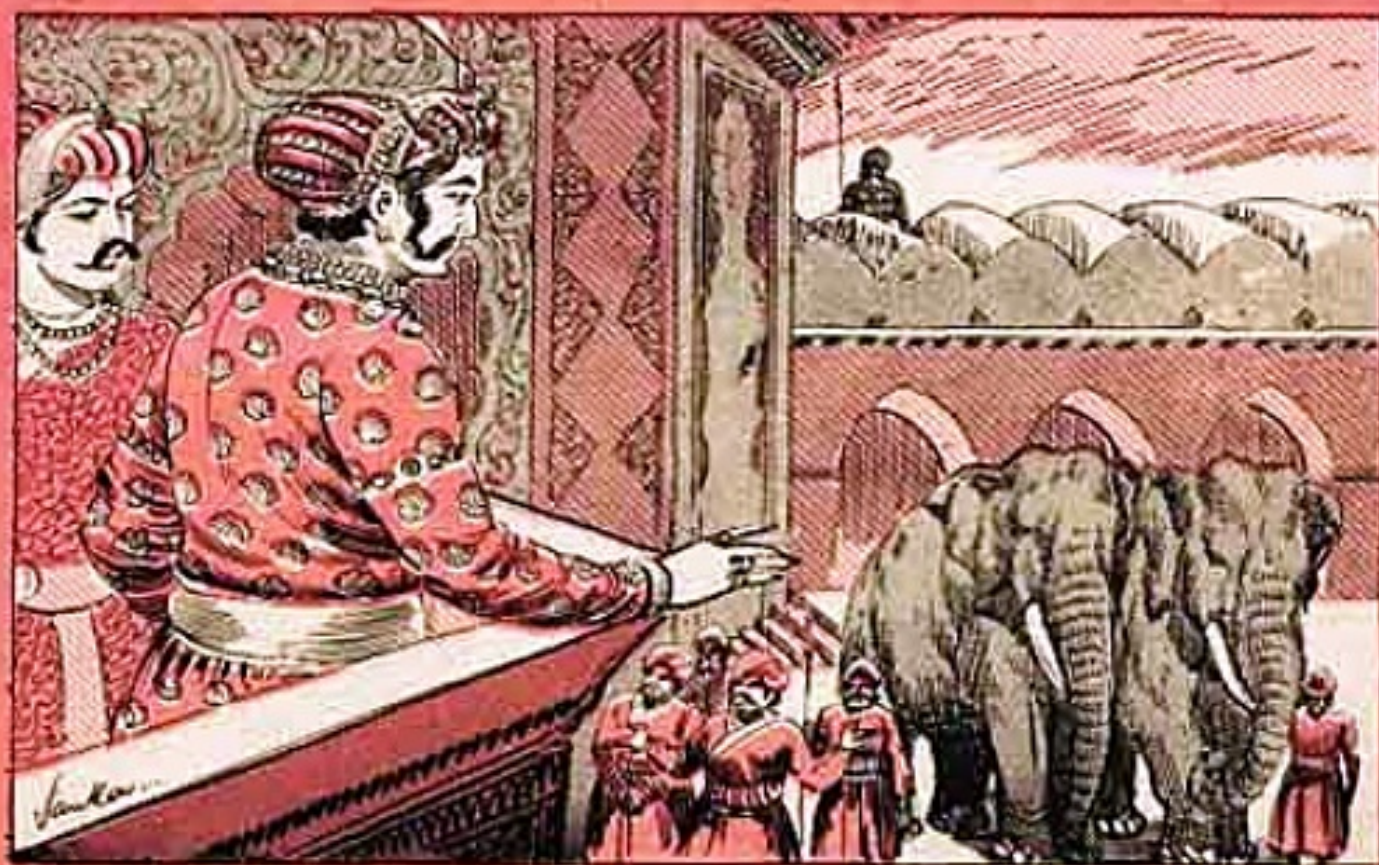
परन्तु न मालूम क्यों बादशाह को उन पर कुछ दिनों बाद गुस्सा आया कि उनको देश निकाले की सजा दे दी। पर वे बिचारे कहाँ जा सकते थे। वे दिन भर दिल्ली से बाहर जंगलों में रहते। रात के समय नगर में आते। इस तरह उन्होंने कुछ समय बिता दिया।

छः महीने में वे तंग आ गये। यह सोच कि बीरबल ही उनकी समस्या हल कर सकता था, वे छुपे छुपे रात में बीरबल के घर गये। बीरबल ने उनको एक उपाय बताकर भेज दिया।

अगले दिन सवेरे वे उस रास्ते में गये, जहाँ अकबर टहलने जाया करता था। बादशाह को देखते ही वे पेड़ पर चढ़ गये।

अकबर ने उन्हें पहिचानकर पूछा "तुम्हें तो मैंने देश छोड़कर चले जाने के लिए कहा था। अभी दिल्ली में क्यों हो?"

"हुज़ूर हम क्या करें! आपने जिस दिन जाने के लिए कहा था, हम उसी दिन चले गये थे। बहुत दूर गये, चलते गये। पर आपके राज्य की सीमा न आयी। आपका राज्य न मालूम कहाँ तक है। इसलिए हमने सोचा कि यों चलने से काम नहीं चलेगा। आपके राज्य को छोड़कर ऊपर चले जाने की सोचकर हम पेड़ों पर चढ़ गये।" गवैय्ये ने कहा।

अकबर का गुस्सा यह सुनकर जाता रहा। उसने उनको पेड़ पर से उतरने के लिए कहा। "तुम्हें यह तरीका बीरबल ने बताया था न!"

"जी हाँ हुज़ूर...." उन्होंने कहा।

"कल से हमेशा की तरह दरबार में आया करो।" अकबर ने कहा।

[अगले अंक में कुछ और बीरबल की कहानियाँ]

भूतों का किया हुआ विवाह

[२]

चलते चलते शम्स बसरा पहुँचा। वहाँ सुल्तान को उसने अपने अधिकार पत्र दिखाये। सुल्तान ने शम्स को बताया कि नूर अल्दीन उसका वज़ीर था, पर उसके मरे हुए पन्द्रह साल हो गये थे। उसकी पत्नी पुराने वज़ीर की लड़की थी और अभी वह बसरा में रह रही थी।

शम्स तुरत नूर की पत्नी के पास गया। वह बड़ी दुखी थी, क्योंकि पति मर चुका था और लड़के का कहीं कुछ पता न था। शम्स ने उससे अपने लड़के के विवाह के बारे में कहा—"तुम्हारा लड़का, खुश किस्मती से मेरा दामाद बना और इतने में कहीं चला गया। मेरी लड़की ने इस बीच उसके लड़के को जन्म दिया है। जैसा वह मेरा पोता है, वैसा आपका भी है। अजीब को भी मैं अपने साथ लाया हूँ।"

नूर की पत्नी यह सुनते ही कुछ चेती। उसे यह जान बड़ा सन्तोष हुआ कि घर छोड़ने के बाद उसका लड़का कुछ दिन जीवित रहा और उसके एक लड़का भी हुआ। अजीब को अपने घर बुलाकर उसे गले लगाकर उसने आनन्दाश्रु बहाये।

"कम से कम अब हम सब एक जगह तो रहें। आप क्यों नहीं हमारे साथ कैरो चली आतीं?" शम्स ने कहा।

जैसे शम्स के यह कहने की देरी थी कि नूर की पत्नी ने अपनी सारी सम्पत्ति बटोरी। अपने नौकर चाकरों के साथ वह यात्रा के लिए तैयार हो गई। शम्स ने बसरा के सुल्तान के पास जाकर

भवानी प्रसाद

उससे विदा माँगी। सुल्तान ने शम्स को तो कई उपहार दिये ही। मिश्र के सुल्तान के पास भी बहुत-सी चीज़ें भेंट में भेजीं। फिर शम्स अपने पोते और दो स्त्रियों को लेकर कैरो के लिए वापिस निकल पड़ा। वापिसी रास्ते में भी वे पहिले की तरह डमास्कस नगर के बाहर मैदान में डेरे गाड़कर रहे। जब नगर के व्यापारी और मुख्य लोग उसके नाना से बातें कर रहे थे, अजीब ने सैय्यद से कहा—"बाबा, क्या हम एक बार शहर में हो आयें? उस दिन जिसे मैंने पत्थर से मारा था, न मालूम उस दुकानदार की क्या हालत है! चलो उसे देख आयें।"

दोनों मिलकर फिर हसन के पास गये। अजीब ने हसन के मुँह पर घाव का दाग देखा। उसने हसन से पूछा—"क्या मैं तुम्हें याद हूँ? तुम्हारा हालचाल पूछने के लिए ही मैं तुम्हें खोजता खोजता यहाँ आया हूँ।"

हसन ने सिर उठाकर देखा। वह पुलकित-सा हो उठा—"आओ, आओ, मेरे पकवानों को चखकर देखो। बाबू, जब से तुम्हें देखा है मेरा दिल धडधड़ कर रहा है। परन्तु उस दिन मेरा आपके साथ आना गल्ती ही थी।" उसने कहा।

उस दिन भी अजीब और सैय्यद को हसन ने दुकान में अनार का मुरब्बा खिलाया। उन्होंने पेट भरकर उसे खाया। खाने के बाद हसन ने उन्हें खुशबूदार बढ़िया शरबत पिलायी।

तब तक सूर्यास्त का समय हो गया था। वे दोनों हसन से विदा लेकर जल्दी जल्दी चलते चलते अपने डेरों में पहुँचे।

नूर की पत्नी ने अपने पोते को देखते ही पूछा—"बेटा, इतनी देर कहाँ गये

हुए थे? न मालूम कब खाकर गये थे? खूब भूख लग रही होगी। खाना परोसती हूँ, तुम भी बैठो, सैय्यद।" वह अन्दर गई और चीनी की गिन्नी में अनार का मुरब्बा जिसका उसने आविष्कार किया था, उन दोनों को लाकर दिया।

"मैं तो खा नहीं सकता।" सैय्यद ने कहा।

अजीब ने थोड़ा मुरब्बा मुख में तो रख लिया, पर वह उसे निगल न पाया। उसने मुँह सिकोड़कर कहा—"दादी, यह अच्छा नहीं लगता।"

"अरे, तुम तो मेरी बनाई हुई चीज़ को खराब बता रहे हो! कौन है जो मेरी तरह पकवान, मिठाई वगैरह बना सकता है! अगर कोई बना सकता है, तो तुम्हारा पिता बना सकता है। पर उसे तो मैंने ही सिखाया था।" नूर की पत्नी ने गर्व के साथ कहा।

"नहीं दादी, इस तरह का मुरब्बा हम कुछ देर पहिले एक मिठाई की दुकान पर खाकर आये हैं। नाना और माँ से इस बारे में न कहना। उस दुकानवाले ने उसे बड़ा अच्छा बनाया था। उसकी खुशबू भी क्या खुशबू थी और उसका स्वाद भी क्या स्वाद था उसके सामने यह कुछ भी नहीं है।" अजीब ने कहा।

नूर की पत्नी ने गुस्से में सैय्यद की ओर मुड़कर फटकारा "लड़के को इधर उधर की दुकानों में खिलाकर खराब कर रहे हो?"

"हम दुकान की बगल में गये थे, पर दुकान के अन्दर नहीं गये थे, मालकिन" सैय्यद ने कहा।

"अन्दर जाकर खाया था दादी" अजीब ने कहा।

यह बात वज़ीर शम्स तक भी पहुँची। सैय्यद से भी पूछा। फिर उसने झूठ कहा—"हमने दुकान के अन्दर जाकर नहीं खाया था।

"अगर यही बात है, तो मेरे देखते यह सब मुरब्बा खाओ।" शम्स ने कहा।

सैय्यद को कबूल करना पड़ा कि उसने दुकान में पेट भरकर खाया था और उस तरह का मुरब्बा जीवन में उसने पहिले कहीं कभी न खाया था। उस मुरब्बे को खाकर वह यह मुरब्बा नहीं खा सकता था।

यह सुन शम्स ज़ोर से हंसा। नूर की पत्नी इस तरह क्रुद्ध हुई जैसे किसी ने उसका अपमान किया हो। जाओ, तुम उस दुकान में जाकर वह मुरब्बा खरीदकर लाओ, जो तुम खाकर आये हो। मैं देखूँगी कि वह इससे कितना बढ़िया है।

सैय्यद ने हसन की दुकान में जाकर कहा—"इस मुरब्बे के कारण अच्छी आफ़त आयी है। उसे चखना चाहती है जरा थोड़ा बेचो तो, नहीं तो तुम्हारी खाल उखाड़ दूँगा।" हसन ने एक चीनी की गिन्नी में मुरब्बा रखकर कहा—"तुम मत

घबराओ। इस मुरब्बे को मुझ से अच्छी तरह बनानेवाला इस संसार में कोई नहीं है। अगर कोई बना सकती है, तो मेरी माँ बना सकती है और वह कहीं दूर देश में है।"

सैय्यद के लाये हुए मुरब्बे को चखते ही नूर की पत्नी ने कहा—"इसका बनानेवाला मेरा लड़का ही है।"

यह सुनते ही शम्स के विचारों को मानों पंख से लग गये। यह मिठाई की दुकानवाला मेरा दामाद हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। नूर के लड़के हसन को उसने कभी न देखा था। उसको देखे, मेरी लड़की या उसकी माँ को बहुत समय हो गया है। इसलिए उसे देखकर पहिचानना ही काफी नहीं है, उसकी परीक्षा लेनी होगी। और वह यहाँ सम्भव नहीं है। उसे कैरो ले जाना होगा। इसके लिए शम्स ने एक बड़ी चाल सोची। उसने डमास्कस के राजप्रतिनिधि के पास जाकर अपने सुल्तान के दिखाये हुए अधिकार पत्र दिखाये। राजप्रतिनिधिने शम्स का आवश्यक आतिथ्य किया। यदि आपका कोई काम मुझ से होता हो, तो कहिये, मैं करूँगा!

"इस नगर के मिठाई की दुकानवाले को पकड़कर कैरो ले जाना है। आपकी सहायता की कुछ जरूरत है।" शम्स ने कहा।

"यह भी कितना काम है!" कहकर राजप्रतिनिधि ने कुछ हथियारबन्द सैनिकों को शम्स को सौंपा। उसने उन सैनिकों और अपने आदमियों को दुकानवाले के पास भेजते हुए कहा—"इस दुकानवाले को बाँधकर मेरे डेरे के पास लाओ। परन्तु उसे किसी भी परिस्थिति में मारना मत।"

थोड़ी देर में सैनिकों ने हसन को बाँधकर शम्स के आगे हाज़िर किया। हसन ने घबराते हुए पूछा—हुज़ूर, मैंने क्या गलती की है!"

"यह मुरब्बा तुमने बनाया है!" शम्स ने पूछा।

"हाँ, क्या इसके लिए मुझे फाँसी देंगे!" हसन ने कहा।

"क्या फाँसी से ही मामला खतम हो जायेगा!" कहकर शम्स ने एक बड़ा लकड़ी का सन्दूक मँगवाया, उसके अन्दर हसन को रखकर ताला लगवा दिया।

उस सन्दूक को ऊँट पर लदवा दिया। तभी शम्स डेरे उठाकर कैरो के लिए निकल पड़ा।

रास्ते भर शम्स जब भोजनादि के लिए ठहरता, तो लकड़ी के सन्दूक में से हसन को भी निकलवाता और उसे भी भोजन खिलाता।

एक बार हसन ने शम्स से कहा—"आप मेरा क्या करने जा रहे हैं!"

"सूली पर चढ़ाने जा रहा हूँ।" शम्स ने कहा।

"किस अपराध पर!" हसन ने पूछा।

"मुरब्बे में काली मिर्च कम डालने के कारण।" शम्स ने कहा। हसन को चुपचाप फर्श की ओर देखता देख, उसने पूछा—"तुम क्या सोच रहे हो!"

"कुछ नहीं, दुनियाँ में बहुत से मूर्ख हैं, पर तुम-सा मिलना असम्भव है। सूली पर तो तुम्हें चढ़ाना चाहिये।" हसन ने कहा।

उस दिन शम्स नौकरों के साथ कैरो पहुँचा। शम्स ने हसन के सन्दूक को उस हाल में रखवाया जहाँ उसकी सित्तल से शादी हुई थी। शयनकक्ष को उसी तरह सजाया गया जिस तरह उस दिन सजाया
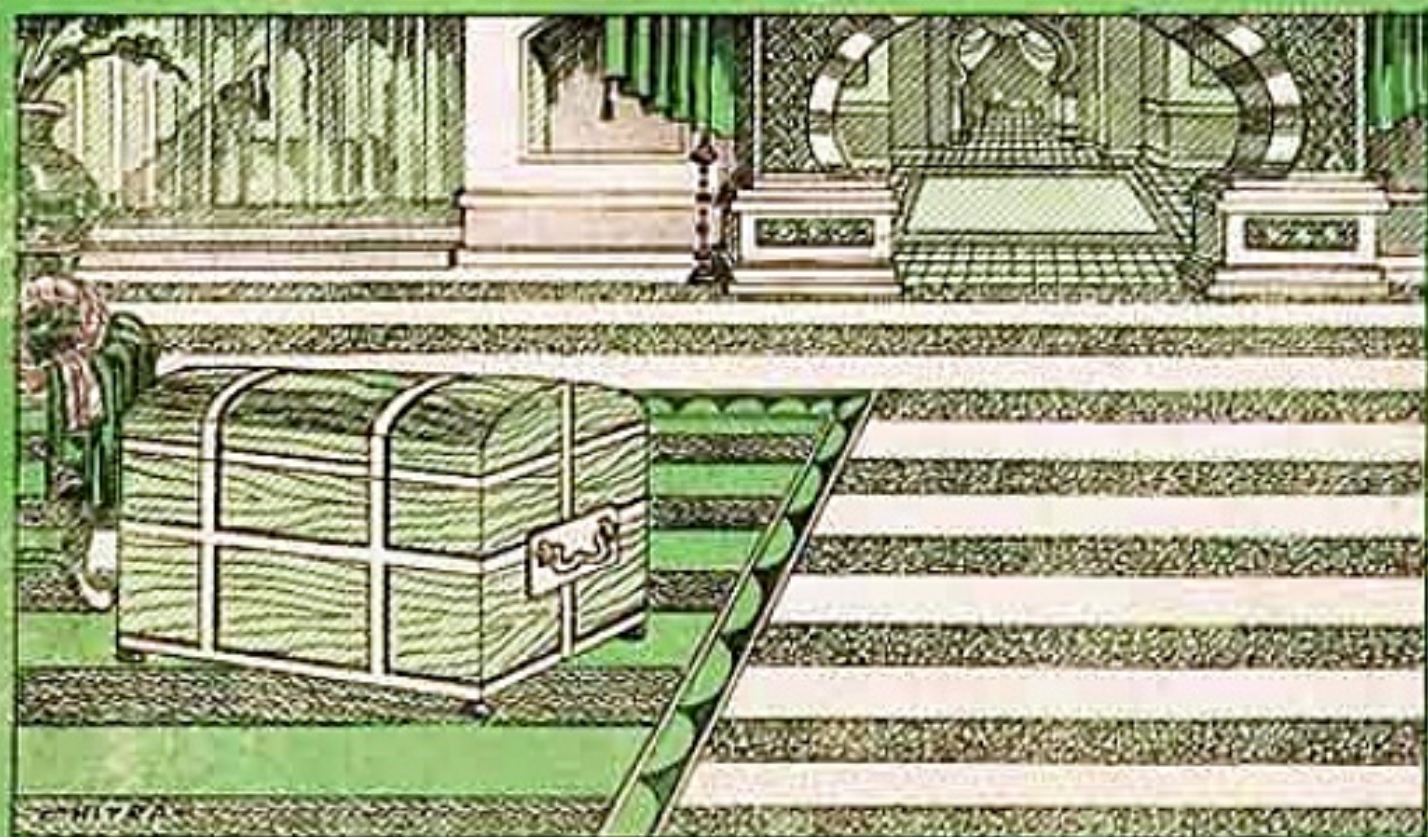
गया था। जो चीज़ जहाँ रखी जानी थी, वहाँ रखी। अपनी लड़की को फिर दुल्हिन की पोषाक पहिनवाई। हसन सो रहा था, उसे भी सन्दूक से निकलवाया, उसे भी दुल्हे की पोषाक पहिनवाई और कमरे में सुलवा दिया।

हसन जब नींद से उठा, तो नई जगह देखकर उसे अचरज हुआ। उसे ऐसा लगा कि कभी उसने उसको सपने में देखा था। जब वह चलता चलता शयनकक्ष में गया, तो उसे और आश्चर्य हुआ। उसके कपड़े, पगड़ी और मुहरोंवाली थैली, ठीक उसी जगह थीं, जहाँ वह उन्हें छोड़ गया था। उसने उन्हें छूकर देखा और जान गया कि वे उसी की थीं। डमास्कस में पन्द्रह साल बिताना, उसके पास एक लड़के का आना, उसका उसकी दुकान में मुरब्बा खाना, सब शायद सच न था। उसने माथे पर जो हाथ फेरा तो दाग दिखाई दिया। यह सपना न था। यह सच था कि डमास्कस के एक मिठाई की दुकानवाले ने उसे गोद लिया था। यह ही शायद सपना है।

"अब तक कहाँ थे!" हसन को सिचल का प्रश्न करना सुनाई दिया। चार कदम आगे जो गया, तो उसे विवाह के दिन की दुल्हिन दिखाई दी। हसन जोर से चिल्लाया और मूर्छित हो गया।

शम्स हसन को छुपा छुपा देख रहा था। उसके सब सन्देह दूर हो गये। यह ही हसन बद्रुद्दीन है। मेरा दामाद है। नूर का लड़का है।

हसन जो कुछ गुज़रा था, जान गया। उसके कष्ट दूर हो गये। बिना किसी अपराध के उसे इतने सारे कष्ट झेलने पड़े। आखिर पत्नी, बेटे और माँ के साथ वह सुखपूर्वक रहने लगा।

Ranga

असत्यवादी

बहुत समय बाद बाबा आये। "बाबा आ गये हैं। इतने दिन कहाँ रहे बाबा, तुम!" यह पूछते, बच्चों ने बाबा को घेर लिया।

"बाबा तुम्हारे चले जाने के बाद हमें किसीने कोई कहानी ही नहीं सुनाई।" एक ने कहा। दूसरे ने पूछा "क्यों बाबा कहानी नहीं सुनाओगे?"

"ज़रा नहा धोकर खाने पीने तो दो फिर बातें करेंगे" बाबा ने कहा।

बाबा जब नहा धोकर आया तो बच्चों ने उसके लिए कुर्सी तैयार रख रखी थी। बाबा की सुंघनी एक लड़के ने अपनी मुट्ठी में रखी हुई थी। बाबा कुर्सी में बैठकर सुँघनी खोज रहा था।

"सुँघनी ही न! ये हैं, श्लोक सुनाओ, तो दे देंगे।" लड़कों ने कहा।

"तुम्हारा सिर, मैंने इतने श्लोक सुनाये, क्या तुम्हें एक श्लोक भी याद है?

"श्लोक भले ही याद न हो, तुम्हारी सुनाई हुई कहानियाँ याद हैं।" एक लड़के ने कहा।

"तुम्हारे जाने के बाद हमने कोई कहानी सुनी ही नहीं।" एक और ने कहा।

बाबा ने सुँघनी छीन ली। नाक में डालते हुए कहा। "अरे कभी सुना है कि झूठ भी बोलो, तो ऐसा बोलो कि विश्वास हो! वहाँ कोने में सब "चन्दामामा" पड़े हुए हैं। कैसे विश्वास हो कि तुमने कहानी सुनी ही नहीं है।"

"नहीं बाबा, हमें तुम्हारी कहानियाँ भी चाहिए।" झूठ बोलनेवाले लड़के ने कहा।

गविष्टिर

"तो क्या बाबा, हमें तुम कहानी न सुनाओगे?" बाकी लड़कों ने पूछा।

"सुनाऊँगा जरा सब्र तो करो जानते हो मैंने क्यों कहा था, झूट भी बोलो तो ऐसा बोलो कि विश्वास हो। इस बारे में एक कहानी सुनाता हूँ।" बाबा ने कहा। फिर उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक शहर में एक राजा रहा करता था। उसके कर्मचारियों में एक सत्यवादी था और दूसरा असत्यवादी। सत्यवादी सची बातें ही राजा को सुनाकर उनका मनोरंजन करता था और असत्यवादी? वह झूठी बातें सुनाकर राजा का मन बहलाता।

परन्तु राजा असत्यवादी को अधिक वेतन दिया करता। सत्यवादी को कम ही वेतन दिया करता। इसलिए असत्यवादी बड़े बड़े मकान बनवाकर नौकर चाकर के साथ बड़े वैभव के साथ रहा करता था और सत्यवादी को जितना वेतन मिलता उससे उसका और उसकी पत्नी का मुश्किल से निर्वाह होता।

एक बार सत्यवादी से उसकी पत्नी ने कहा—"आप राजा से रोज़ सच ही कहते हैं। जो झूट मूट गढ़ गढ़ाकर

सुनाता है, राजा उसे अधिक वेतन देते हैं। आप क्यों नहीं असत्यवादी का काम करते? आराम से रहेंगे।"

यह सुन सत्यवादी ने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज, मैं सत्यवादी के तौर पर इतने दिनों से आपके यहाँ काम कर रहा हूँ। मुझे असत्यवादी का काम क्यों नहीं देते?"

तब जानते हो, राजा ने क्या किया? "यह पगला ब्राह्मण वेतन के लालच में ऐसा काम माँग रहा है, जो वह कर न पायेगा।" यह सोच सत्यवादी से

उसने कहा—"कल तुम्हें असत्यवादी का काम दूँगा। यदि वह काम तुमने अच्छी तरह किया तो आगे तुम ही वह काम करना।"

अगले दिन सत्यवादी आकर असत्यवादी के आसन पर बैठ गया।

राजा ने बाकी सब काम देखकर उसकी ओर मुड़कर पूछा—"क्या खबर है?"

सत्यवादी को कोई न कोई झूट बोलना था। इसलिए उसने कहा—"कुछ नहीं महाराज, न मालूम कि आपने सुना है कि नहीं? कल एक आदमी नदी में गिरकर जलकर मर गया।"

"पानी में आदमी डूबकर मरता है, या जलकर? क्या हुआ?" राजा ने उससे हँसते हुए पूछा।

सत्यवादी बगलें झाँकने लगा। उसने झूट कह तो दिया, पर उसका कैसे समर्थन किया जाय, वह न जानता था। राजा ने पुराने असत्यवादी की ओर मुड़कर पूछा—"तुम जानते हो यह आदमी पानी में गिरकर कैसे जलकर मर गया?"

"हाँ, जानता हूँ महाराज! वह आदमी एक नाव में बोरों में चूना डालकर, उनके बीच में बैठकर नदी में जा रहा था। नाव डूब गई। चूने के पत्थर पानी छूते ही उबलने लगे। उसकी भाप में वह आदमी जल कर मर गया। यही हुआ और कुछ नहीं महाराज।" असत्यवादी ने कहा।

"यही बात है और क्या बात है?" राजा ने फिर सत्यवादी से पूछा। इस तरह अच्छा विश्वसनीय असत्य कहने का एक और मौका दिया। सत्यवादी ने सिर खुजलाकर कहा—"महाराज, क्या आपने यह बात सुनी? कुछ दिन पहिले हमारे

राजकुमार शिकार खेलने गये। उन्होंने एक बाण हरिण पर छोड़ा, वह बाण पैर के खुर में लगा और फिर सिर से निकल गया।"

"अरे भाई वह बाण जो हरिण के खुर पर लगा, कैसे सिर से निकल गया! यह भी क्या अजीब बात है!

सत्यवादी को फिर न सूझा कि क्या कहे! राजा ने असत्यवादी की ओर मुड़कर पूछा—"क्या तुम जानते हो, यह अजीब बात कैसे हुई!"

"क्यों नहीं जानता हूँ महाराज, जब राजकुमार ने वह बाण छोड़ा था, तो हरिण अपने खुर से सिर खुजला रहा था। बस इतनी ही बात है महाराज।" असत्यवादी ने कहा।

सत्यवादी को नीचा देखना पड़ा। राजा ने दो बार मौका दिया और दोनों बार वह ऐसा असत्य न बोल सका, जिस पर विश्वास किया जा सके! राजा ने उसे फिर एक और मौका देने की सोचकर पूछा—"और क्या हालचाल है!"

जब कभी राजा कुछ पूछता, तो कुछ न कुछ तो कहना ही था। इसलिए सत्यवादी
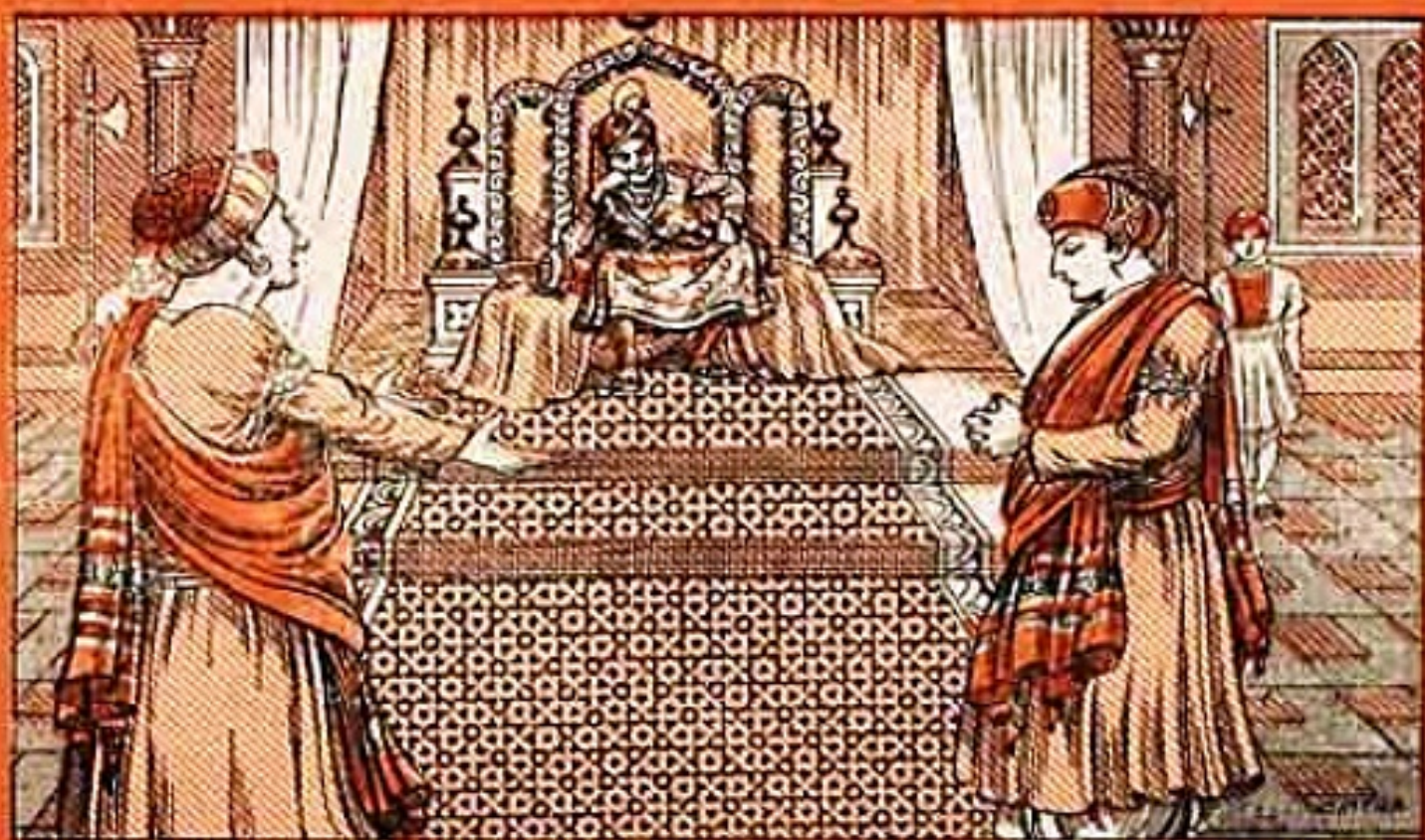
ने कहा—"और कुछ नहीं महाराज, पिछले महीने नदी में बाढ़ में एक बड़ी-सी चट्टान तैर कर आ गई।"

"चट्टान भी भला कैसे तैरकर आ सकती है? यह कैसे हुआ भाई?" राजा ने पूछा।

सत्यवादी फिर चुप। वह असत्यवादी की ओर देखकर जम-सा गया।

"भाई तुम जानते हो, चट्टान कैसे पानी में आ गई!" राजा ने असत्यवादी से पूछा।

"और कुछ नहीं महाराज, पिछले साल किनारे पर घिये की बेल एक चट्टान से जा लिपटी। गरमियों में वह सूख गई और घिये भी सूख गये। जब नदी में बाढ़ आई, तो वह बेल नदी में जा गिरी। घिये हैं न देखिये, वे तैरने लगे। उसके ऊपर चट्टान भी तैरने लगी। बेल के साथ चट्टान भी आई। यही बात सत्यवादी आपसे कह रहे थे।"। असत्यवादी ने कहा।

कहते हैं सत्य छोटा है और असत्य लम्बा। सत्यवादी जान गया कि उसकी बुद्धि सीमित थी। उसने कहा कि वह असत्यवादी का पद नहीं चाहता था, उसने राजा से सविनय निवेदन किया कि उसे सत्यवादी के पद पर ही काम करने दिया जाये।"

"तुम्हारी मर्जी।" कहकर राजा ने सत्यवादी का वेतन बढ़ा दिया। इससे सत्यवादी भी सन्तुष्ट हो गया।

"इसलिए यह न सोचो कि असत्य बोलना आसान है।" कहकर बाबा ने कहानी खतम की।

भूत छूट गया

गोल मटोल भीम भी अब गृहस्थी हो गया और अपनी स्त्री महालक्ष्मी के साथ सुखपूर्वक गृहस्थी निभा रहा था। एक दिन भीम ने देखा कि रात को सोते समय महालक्ष्मी नाक बजा रही थी। उसे सन्देह हुआ कि किसी भूत ने उसकी पत्नी को पकड़ लिया था और इसलिए ही वह यों खुर्राटे मार रही थी, सवेरा होते ही वह भूत वैद्य को बुलाने के लिए निकला। महालक्ष्मी ने, जो हमेशा अपने पति को हज़ार आँखों से देखा करती थी पूछा—"बिना बताये आप कहाँ जा रहे हैं?"

"भूत वैद्य से बातचीत करनी है।" भीम ने कहा।

"यदि भूत वैद्य से ही बात करनी है, तो क्या आपको ही जाना है। नौकर से उन्हें बुलवाइये।" महालक्ष्मी ने कहा।

"हाँ यह तो ठीक है, पर जो बातें मैं भूत वैद्य से करूँगा, वह तुम्हें नहीं सुननी चाहिये।" भीम ने कहा।

"नहीं सुननी चाहिये, तो नहीं सुनूँगी।" कहकर महालक्ष्मी ने नौकर को भेजकर भूत वैद्य को बुलवाया।

भीम भूत वैद्य को एक कमरे में ले गया—"लगता है मेरी पत्नी के शरीर में कोई भूत घुस गया है। वह जब सोती है तो वह बड़ा शोर करता है और मुझे तंग करता है। उस भूत को भगाने के लिए कुछ न कुछ करना होगा।" भीम ने कहा। पर भूत वैद्य जान गया कि पत्नी को खुर्राटे मारते देख, यह सोच रहा है कि उसे भूत ने पकड़ लिया है।

यह सोच कि उसका भाग्य चमका है, भूत वैद्य ने कहा—"हूँ, इस तरह के

भूत को छुड़ाने के लिए बहुत कुछ करना होता है। कम से कम दो हज़ार रुपये खर्च होंगे।"

"कितना भी खर्च हो मैं दूँगा।" भीम ने कहा। इन दोनों की बातचीत महालक्ष्मी ने आड़ में से सुनी। भूत वैद्य पर उसे बड़ा गुस्सा आया। जब वह जा रहा था, तो उसने आकर कहा—"आज आप हमारे यहाँ ही खाना खाइये।" भूत वैद्य इसके लिए मान गया। महालक्ष्मी ने उसको खूब खिलाया पिलाया। खा पीकर, भूत वैद्य एक जगह लेट गया, पेट भर खाया था, इसलिए वह नाक बजाने लगा।

महालक्ष्मी ने अपने पति को भूत वैद्य को दिखाकर कहा—"देखा, इस भूत वैद्य ने कितना धोखा दिया है! मेरे शरीर की लक्ष्मी को हथियाने के लिए इसने मुझ पर एक भूत छोड़ा। जब वह रात को मेरी नाक में से घुसा, तो लक्ष्मी ने लात मारकर भगा दिया। उस भूत ने अब वैद्य को ही पकड़ रखा है। देखिये वह कैसे खुर्राटे मार रहा है। यदि उसे भरसक दूर न रखा गया, तो वह हमारी लक्ष्मी छीन लेगा।"

"तो यह बात है!" कहता भीम उठा। सोते हुए भूत वैद्य को उसने एक मुक्का मारा। "अबे भूत के बच्चे। निकल मेरे घर से। अगर फिर कभी अपनी शक्ल दिखाई तो जान निकाल दूँगा।"

नीन्द से हठात् उठाया गया था, इसलिए वह सचमुच इस तरह भागा, जैसे उसे भूत ने पकड़ लिया हो।

इसके बाद यदि कुछ ऊँटपटाँग बातें कभी भीम के मन में आतीं भी तो बिना पत्नी की सलाह के वह कुछ न करता। इस तरह वे बिना किसी कठिनाई के हमेशा सुख से गृहस्थी निभाते रहे। (समाप्त)

थोड़ी देर भरत पिता की मृत्यु पर रोता रहा। फिर उसने पूछा—"क्या माँ, उन्होंने अन्तिम क्षण में कुछ कहा था? उन्होंने क्या कहा था?"

"राम, लक्ष्मण, सीता....कहते कहते, उन्होंने प्राण छोड़ दिये।" कैकेयी ने कहा।

भरत ने आश्चर्य से पूछा—"यह क्या! राम, सीता, लक्ष्मण क्या पास नहीं थे? वे कहाँ थे?"

"वे तो वनवास के लिए चले गये हैं न! राम, जब वल्कल वस्त्र पहिनकर, जंगल जा रहे थे तो सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ चले गये।" कैकेयी ने धीमे धीमे कहा।

भरत ने और चकित होकर पूछा—"क्या! राम ने क्या पाप किया था! वह तो कोई खराब काम नहीं करता है? प्राण हत्या के अपराधी की तरह उसको वनवास का दण्ड क्यों दिया गया? बात क्या है?"

"ऐसी कोई बात नहीं। जब मुझे मालूम हुआ कि राजा उसका पट्टाभिषेक करना चाहते थे, तो मैंने दो वर माँगे। वे यह कि तेरा पट्टाभिषेक हो और राम को वनवास के लिए भेज दिया जाय। महाराज

मान गये। वशिष्ठ आदि जो कुछ करना है वह सब कर देंगे। तुम सन्तोष से अपना पट्टाभिषेक करवा लो।" कैकेयी ने कहा।

कैकेयी के ये बातें सुनकर भरत गरमाया। उसने बुरा भला कहा—"तुमने अपने पति को मारा है। राम को वन में भेजा है। तुम्हारा मुँह देखना ही पाप है। क्या तुम नहीं जानते कि क्षत्रिय वंश का धर्म है कि ज्येष्ठ पुत्र का ही पट्टाभिषेक हो। राम और लक्ष्मण के बगैर मैं यहां राज्य भार कैसे ले सकूँगा? मैं अब जाकर

उस राम को बुलाऊँगा, उसका राज्याभिषेक करके मैं उसकी नौकरी करूँगा।" उसने अपनी माँ से कहा। उसने यह भी कहा—"जाओ, आग में कूदो, नहीं तो स्वयं जंगल में जाकर रहो। यह भी न हो तो गला घोंटकर मर जाओ।"

इतने में मन्त्री वहां आये। भरत ने उनसे साफ़ साफ़ कहा कि वह राज्य नहीं चाहता था, उसने अपनी माँ से भी न कहा था कि वह राज्य चाहता था उससे वर माँगने के लिए भी न कहा था।

सीता-राम और लक्ष्मण के वन चले जाने के बारे में वह और शत्रुघ्न चूँकि दूर देश में थे बिल्कुल न जानते थे।

फिर भरत और शत्रुघ्न कौशल्या के पास गये। उसका आलिंगन करके वे भी उसके साथ रोये। जब वह भरत को जो कुछ कैकेयी ने किया था, सुना रही थी तो भरत को लगा कि वह उसको कैकेयी के साथ मिला रही थी। उसने रो रोकर कहा कि वह राम के वनवास के लिए कभी न माना था। कौशल्या ने उसको आश्वासन दिया।

दुखित भरत से वशिष्ठ ने कहा—"बेटा, यह शोक छोड़ो, महाराजा दशरथ की अन्त्येष्टि क्रिया करो।"

रसायनों में से निकाले हुए पिता के शरीर को देखकर भरत रोया—"पिता जी, आप गुज़र गये, राम वन में हैं, मैं कैसे यह राज्य भार वहन कर सकूँगा।"

दशरथ को पालकी में बिठाकर नगर के बाहर ले गये। शव के आगे आगे नागरिक चान्दी, सोना, सिके, चन्दन, धूप बत्ती आदि लेकर चल रहे थे। दशरथ की पत्नियाँ पालकियों में गईं। शव को चिता पर रखने के बाद दशरथ की पत्नियों ने भरत के साथ चिता की प्रदक्षिणा की। भरत के चिता पर आग लगाने पर नगरवासी नगर वापिस चले आये।

भरत ने पिता के लिए दस दिन तक शोक मनाया। फिर दो दिन तक श्राद्ध करवाया। ब्राह्मणों को उसने अन्नदान, वस्त्रदान आदि दान किये। तेरहवें दिन भरत जब अस्थि संचयन के लिए गया तो वह और उसके साथ शत्रुघ्न पिता को याद करते करते रोये।

फिर एक जगह बैठकर भरत और शत्रुघ्न बातें करने लगे। शत्रुघ्न आश्चर्य प्रकट रहा था कि क्यों नहीं भाई लक्ष्मण ने पिता को ऐसा करने से रोका।

इतने में मन्थरा, महारानी की तरह अपने को सजाकर बन्दरनी की तरह वहाँ आयी।

द्वारपालक उसको पकड़कर शत्रुघ्न के पास लाये। "ये लीजिये, सब पापों का मूल कारण मन्थरा।" शत्रुघ्न क्रोध में उसको मारने के लिए खींचने लगा। मन्थरा के साथ जो दासियाँ थीं वे

डर गईं और कौशल्या के पास भागी भागी गईं।

मन्थरा जोर जोर से चिल्लाने लगी। कैकेयी जब मन्थरा को छुड़ाने के लिए आयी तो शत्रुघ्न ने उसको खूब गालियाँ दीं। तब कैकेयी जाकर भरत को बुलाकर लायी।

भरत ने शत्रुघ्न से पूछा—"क्या स्त्री को मारोगे! यदि यह बात राम को मालूम हुई तो क्या कभी वह हमारा मुख देखेगा? कहीं राम को गुस्सा न आ जाये, इसलिए मैंने कैकेयी को नहीं मारा, नहीं तो कभी का उसे मार चुका होता। उस कुबड़ी को छोड़ दो।"

दशरथ के मरने के चौदहवें दिन सवेरे नगर के बड़े लोगों ने आकर भरत से कहा—"राज्य का कोई नेता नहीं है। सौभाग्यवश अराजकता नहीं शुरु हुई है। आपको तुरत पट्टाभिषेक कर लेना चाहिए।"

भरत ने उनसे कहा—"हमारे वंश की यह परम्परा है कि ज्येष्ट पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी हो। इसलिए आपका मुझे राजा बनाने की चेष्टा करना उचित नहीं है। केवल इसलिए कि यह मेरी माता की इच्छा है, मैं मुकुट नहीं पहिनूँगा। मैं जंगल में जाकर अपने बड़े भाई राम को राजा बनाकर लाऊँगा और उसके बदले मैं स्वयं अरण्यवास करूँगा। क्योंकि राज्याभिषेक वन में ही होगा, इसलिए आवश्यक सामग्री लेकर सभी सेनाओं को मेरे साथ जाने की व्यवस्था की जाये।"

भरत की यात्रा के लिए बड़ी तैयारियाँ होने लगीं। वन में पेड़ों को काटकर रास्ता बनाया गया। नदियों पर पुल

बनाये गये। रास्ते में जो गढ़े आदि थे उनको भर दिया गया। जगह जगह कुंये खोदे गये। अच्छी जगह देखकर वहाँ शिविर बनाये गये। घर और गलियाँ बनाई गईं। इस तरह के शिविर सरयू नदी के किनारे से लेकर गंगा के किनारे तक बनाये गये।

उस दिन रात को शंख निनाद, भेरि नाद, स्तोत्र आदि सुनकर भरत उठा और उसकी आँखों में पानी आ गया। उसने कहा—"मैं राजा नहीं हूँ। मेरे लिए स्तोत्र की आवश्यकता नहीं, न मंगल वाद्यों की ही।"

वशिष्ठ अपने कर्मचारियों के साथ राजसभा में भरत का पट्टाभिषेक कराने के लिए आये। उन्होंने नगर प्रमुख, मन्त्री, गणनायक, भरत और शत्रुघ्न आदि को बुला लाने लिए दूत भेजे। सब ने आकर जल्दी ही सभा को सुशोभित किया। सभा को देखकर ऐसा लगता था, जैसे दशरथ अभी जीवित ही हों।

सभासदों के समक्ष वशिष्ठ ने भरत से राज्याभिषेक करने के लिए निवेदन किया। भरत ने वही फिर कहा, जो वह पहिले नागरिकों से कह चुका था। "मैं आप सब के सामने राम को फिर वापिस लाने का यथाशक्त प्रयत्न करूँगा। अगर वह न आया तो मैं भी लक्ष्मण की तरह वन में ही रह जाऊँगा। मेरे प्रयाण के लिए पहिले ही तैयारियाँ हो चुकी हैं। मार्ग निर्माता, मार्ग रक्षक पहिले ही जा चुके हैं। मेरा जाना ही बाकी है।"

यह सुन सब को सन्तोष हुआ। यात्रा के लिए सेना को सन्नद्ध करने के लिए सुमन्त्र ने सेनाध्यक्षों से कहा। अयोध्या नगरी में फिर प्राण संचरित होने लगे।

पड़े। हज़ारों ब्राह्मण बैल गाड़ियों पर सवार होकर भरत के साथ साथ यात्रा करने लगे।

इतनी बड़ी सेना लेकर भरत गंगा के किनारे शृंगिबेरपुर के पास पहुँचा। उसने अपनी सेना को नदी के किनारे जहाँ तहाँ पड़ाव करने के लिए कहा। उसने मन्त्रियों से कहा—"आज रात को हम यहाँ विश्राम करेंगे। कल गंगा पार करेंगे। मैं अब नदी में उतरकर पिता का तर्पण करूँगा।"

महा समुद्र-सी सेना को गंगा तट पर पड़ाव करते गुह ने देखा। रथ से उसने पहचान लिया कि वह भरत का रथ था। उसने अपने विश्वासपात्रों को बुलाकर कहा—"भरत इतनी बड़ी सेना लेकर क्यों आया है? कहीं राम वनवास से वापिस आकर फिर राज्य न माँगे, इसलिए उसे वन में ही मारने के लिए आया है क्या? हमें जैसे भी हो, राम की रक्षा करनी है। वह मेरा मित्र है। इसलिए पाँच सौ नौकाओं को तैयार रखने के लिए कहो। एक एक नौका में सौ सौ आदमी रखो और गंगा के आर पार

अगले दिन भरत मुँह सवेरे ही उठकर निकल पड़ा। उसके साथ नौ हज़ार हाथी, साठ हज़ार रथ, लाख घोड़े और योद्धा थे।

कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी भी अपने अपने अलग वाहनों में निकलीं। कैकेयी पर जो भूत सवार था, वह उतर गया था। वह अपने किये पर पश्चात्ताप कर रही थी। वह औरों से आगे निकली।

जनता झुण्डों में भरत के पीछे निकली। जो राम को चाहते थे, ऐसे व्यापारी वगैरह लोग, उनको देखने के लिए निकल

इन नौकाओं को रखो। नौकाओं में अन्न व आहार पदार्थ रखो। भरत यदि राम की हानि नहीं करना चाहे तो उन्हें नदी पार करने दो, नहीं तो हम उन्हें रोकेंगे।"

गुह यह सब व्यवस्था करके मछलियाँ, माँस और शहद उपहार में लेकर भरत के पास गया। गुह को आता देख सुमन्त्र ने भरत से कहा - "आपको देखने के लिए जंगलियों का राजा गुह आ रहा है। वह बलवान है, समर्थ है और राम का अच्छा मित्र है। यदि उसका उचित आदर सत्कार किया गया तो राम का पता वगैरह मिल सकेगा।"

"तो उस गुह को तुरत मेरे पास बुलाओ।" भरत ने सुमन्त्र को भेजा। गुह ने भरत के पास आकर अपने लाये हुए उपहार दिये। "यदि मुझे पहिले पता लगता कि आप आ रहे हैं, तो आपका स्वागत करता और अच्छा आतिथ्य करता। आज रात हमारा आतिथ्य स्वीकार करके कल आगे जाइये।"

भरत ने गुह से इस प्रकार कहा, ताकि उसको सन्तोष हो—"राजा, तुम इतनी बड़ी सेना का आतिथ्य करना चाहते हो, इससे अधिक गौरव की बात हमारे लिए क्या हो सकती है! हमें भरद्वाज मुनि के आश्रम में जाना है, क्या हमें रास्ता बता सकोगे! सुनता हूँ यहाँ से रास्ता बहुत कठिन है।"

"बाण लेकर हमारे लोग आपके साथ आयेंगे। मैं भी साथ होऊँगा। इसलिए आपको रास्ता ढूँढ़ने की आवश्यकता ही न होगी।" गुह ने कहा।

बड़े बांस

लंका में कन्डी नगर के समीप प्रसिद्ध बोटेनिकल गार्डेन्स हैं। इनका क्षेत्रफल १५० एकड़ है। यहाँ बर्मा के बाँस इतने बड़े होगये हैं, कि वे इतने बड़े कहीं और नहीं पाये जाते। इन बाँसों की ऊँचाई १२० फीट है और मुटाई एक एक फुट।

१. रामजीत सिंह, कानपुर

क्या मैं "काँसे का किला" नामक धारावाहिक पुस्तक रूप में प्राप्त कर सकता हूँ? तथा कहाँ से?

अभी यह पुस्तकाकार में प्रकाशित नहीं हुई है।

२. मनिन्द्र जीत, कपूर्थला

किस भाषा के "चन्दामामा" की बिक्री अधिक होती है?

हिन्दी की।

३. चन्द्रभान भगोनीया, बम्बई

"अप्रैल के अंक में भूतों का किया हुआ विवाह "नामक कहानी में" जो भूतों द्वारा विवाह किया गया है, क्या वह वास्तव में सत्य है?

वह कहानी थी, सच नहीं होती। भूत हैं भी कि नहीं, अगर हैं तो क्या विवाह भी करते हैं कि नहीं...ये सब कल्पना जन्य बातें हैं।

४. विमला शर्मा, पिलानी

क्या धारावाहिक उपन्यास की अलग पुस्तक में भी फोटो आते हैं?

इस तरह एक ही उपन्यास छपा है—"विचित्र जुड़वाँ" और उसमें चित्र हैं।

५. बलवन्त सिंह, हैदराबाद

अगर चन्दामामा प्रकाशन से ही और कोई कहानियों की मासिक पत्रिका निकले तो कितना अच्छा हो?

हाँ भाई, कितना अच्छा हो, किसी न किसी दिन तो यह होगा ही।

६. परम प्रकाश दीक्षित, कानपुर

एक पत्र में अपने मत, प्रश्न और परिचयोक्ति भेज सकते हैं या नहीं, या एक ही आदमी दो परिचयोक्तियाँ भेज सकता है या नहीं?

अलग अलग भेजना अच्छा है। हाँ, एक ही आदमी दो से अधिक परिचयोक्तियाँ भेज सकता है, मगर अलग अलग कार्ड पर।

७. महेशकुमार, एल. गुप्ता, अमरावती

आप "चन्दामामा" में हर महीने चुटकुलेमय व्यंग्य चित्र क्यों नहीं देते?

व्यंग्य चित्र तो कभी कभी देते हैं। "चन्दामामा" कथा प्रधान पत्रिका है। इसमें कथाओं के लिए ही स्थान कम रहता है। स्थान मिलने पर चुटकले भी देंगे।

८. अरुण कुमार, आगरा

जब भी पाठकों ने "चन्दामामा" का कलेवर बढ़ाने का सुझाव किया है, आप यह उत्तर हमेशा देते हैं कि पृष्ठों का अभाव है। क्यों नहीं आप "चन्दामामा" के टाइप (अक्षर) छोटा करवाकर उसके स्थान पर अन्य स्तम्भ बढ़वा देते?

सुझाव खराब नहीं है। इस प्रकार कथा सामग्री तो अधिक होगी, पर पढ़ने की सुविधा कम होगी, यह हमारा ख्याल है। फिर "चन्दामामा" में क्या कम सामग्री प्रकाशित हो रही है?

पुरानी प्रतियाँ चाहिए। क्या आपके यहाँ पुरानी प्रतियाँ मिल सकेंगी?

पुरानी प्रतियाँ तो नहीं मिल पायेंगी, हमारे पास फाईल के लिए भी कभी कभी प्रतियाँ नहीं बचतीं।

९. भागवत प्रसाद जालान, चरसलीगंज, गया

चन्दामामा के छः संस्करणों में से प्रत्येक भाषा में कितनी कितनी संख्या में छपते हैं?

हिन्दी ७३ हजार, मराठी ५० हजार, तेलुगु ८५ हजार, कन्नड ३० हजार, तमिल २० हजार और गुजराती १२ हजार प्रतियाँ हर मास छपती हैं।

Photo by J. V. Sivarama Sastry

पुरस्कृत परिचयोक्ति

मस्त पवन बाँसुरिया की धुन !

प्रेषक : रविन्द्रसिंह - मानसा

Photo by P. Krishna Kumar
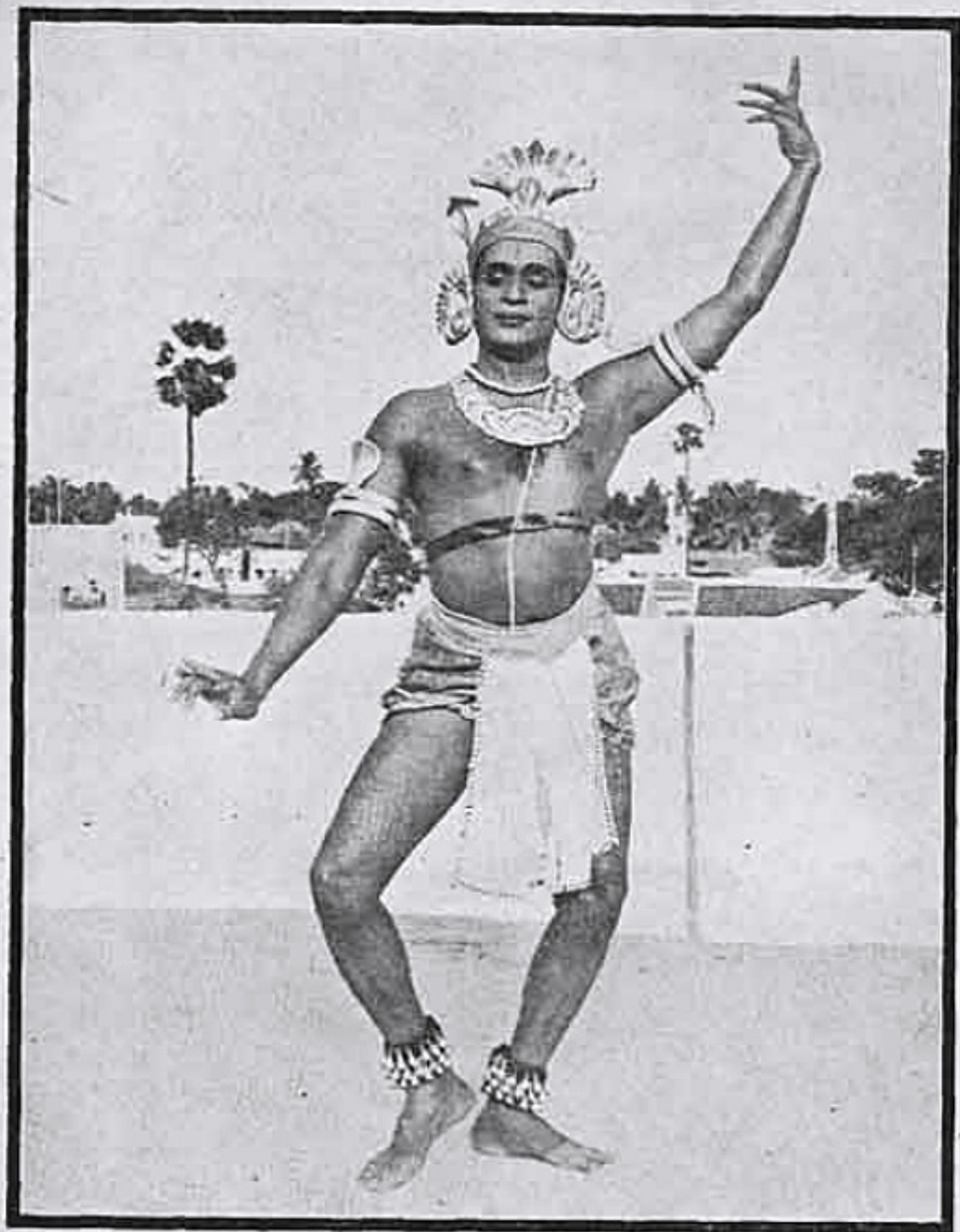
पुरस्कृत परिचयोक्ति

बजे ताल पर घूँघरू रुनझुन !!

प्रेषक : रविन्द्रसिंह - मानसा

आत्म वंचक ★ [रामतीर्थ कथा]

एक गाँव में एक बावला रहा करता था। एक दिन वह गली में गया, उसने जाते जाते बहुत से बच्चे जमा कर लिए। उसने यूँ ही उनसे कहा—"गाँव के मुखिया के घर मिठाई बाँटी जा रही है। जाओ।"

बच्चे ही तो थे, जब मिठाई बँट रही हो, तो क्या वे चुप रहते!

वे सब झुन्ड बनाकर निकले, रास्ते में जो बच्चे मिले, उनको मिलाकर, वे मुखिया के घर पहुँचे।

वहाँ उन्होंने देखा कि कोई मिठाई नहीं बाँटी जा रही थी।

वे सोच ही रहे थे कि उसने उन्हें धोखा दिया था कि बावला भी वहाँ आया।

"खैर, माना, तुमने हमसे तो झूट बोला, पर तुम भी हमारे साथ क्यों चले आये!" बच्चों ने उससे पूछा।

तब बावले ने कहा—"जब तुम सबको मैंने जाते देखा, तो मैंने सोचा कि शायद सचमुच मिठाई बाँटी जा रही थी, इसलिए मैं भी चला आया।" उसने कहा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जुन १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जुन – प्रतियोगिता – फल

जुन के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **मस्त पवन बाँसुरिया की धुन!**

दूसरा फ़ोटो : **बजे ताल पर घूँघरु रुनझुन!!**

प्रेषक : **रविन्द्रसिंह "मान"**

"मान" आर्ट सर्विस पो. मान जि. भटिण्डा (पंजाब)

अन्तिम पृष्ठ

यह पता लगते ही कि धृतराष्ट्र युद्धभूमि में गया है, युधिष्ठिर, कृष्ण, सात्यकि और युयुत्सु, जो धृतराष्ट्र का पुत्र होते हुए भी पाण्डवों के साथ लड़ा था, साथ लेकर निकला। उनके साथ द्रौपदी और और पाँचाल स्त्रियाँ भी थीं। वे सब दुःख के समुद्र में डूबे हुए थे।

युधिष्ठिर अभी कुछ दूरी ही पर था कि गंगा के तट से धृतराष्ट्र के साथ की स्त्रियों का रोना धोना सुनाई पड़ा। स्त्रियाँ युधिष्ठिर को देखते ही दुख में बहुत-सी कड़वी बातें कह गई—"कहा जाता है कि तुम धर्म जानते हो, प्राणी मात्र पर दया करते हो। वे सब तुम्हारे सुगुण कहा गये? पिताओं, भाइयों, गुरु, पुत्रों, मित्रों सब को मरवा दिया। भीष्म को मरवाया। जयमल्ल को मरवाया। अभिमन्यु भी गया। उपपाण्डव भी गये। यह राज्य कैसे करोगे?" उन्होंने पूछा।

स्त्रियों से अपने को छुड़ाकर युधिष्ठिर धृतराष्ट्र के पास गया, उसको नमस्कार करके उसने अपना नाम बताया। उसकी तरह शेष पाण्डवों ने भी अपने अपने नाम बताये।

धृतराष्ट्र ने औपचारिक रूप से युधिष्ठिर का आलिंगन किया। कुछ बातें करके उसने धधकते हृदय से भीम को भी गले लगाना चाहा।

कृष्ण जान गये कि भीम पर क्या आपत्ति आनेवाली थी। उन्होंने उसे पीछे खींचा और उसके बदले भीम की लोहे की बनी मूर्ति सामने कर दी। धृतराष्ट्र ने उसको भीम समझ कर आलिंगन किया और क्रोध में उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। धृतराष्ट्र का हृदय काँप उठा उसके मुख से रक्त निकला, पर उसका पुत्र शोक कुछ कम हुआ। उसने "अरे भीम, भीम" कहकर अपना कपट दुख दिखाया।

कृष्ण ने उससे कहा—"दुख मत करो, तुमने भीम के टुकड़े नहीं किये हैं। बल्कि उसकी मूर्ति के। तुम्हारे लड़के दुर्योधन ने गदा युद्ध के अभ्यास के लिए जिस मूर्ति को बनाया था, तुमने उसे ही तोड़ा है, अरे पगले क्या भीम को मारने से तुम्हारे मृत पुत्र जीवित हो सकेंगे? पाण्डवों ने जो तुम्हारे प्रति किया है उसे ही तुम याद कर रहे हो, क्यों नहीं वह याद करते जो तुम्हारे लड़कों ने उनके प्रति किया है। युद्ध के विरुद्ध मैंने, विदुर ने, भीष्म और द्रोण ने जो कुछ किया, उसको ठुकराकर तुमने अपने पुत्र का साथ दिया।

धृतराष्ट्र ने पछताकर कहा—"तुम्हारी सब बातें ठीक हैं। मेरे लड़कों के मर जाने के बाद मुझे पाण्डवों पर पुत्र वात्सल्य हो रहा है। उनको स्पर्श कर ही आनन्द पाऊँगा।" उसने पाण्डवों का सहलाकर उनका कुशल क्षेम पूछा। बातचीत की।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

साधना से सुनिये एक रहस्य की बात...

'सुंदर रंगरूप के लिए
लक्स ज़रूरी है'

'मेरा मनचाहा साबुन मेरे मनचाहे रंगों में!' साधना कहती हैं

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

LTS. 111-X25 HI